श्री शान्तिदास प्रणीत संस्कृत शान्तिनाथ विधान का पद्यानुवाद

# श्री शान्तिनाथ मण्डल विधान


रचयिता

**पं. श्री ताराचन्द्र जैन शास्त्री**

सरलार्थ

**पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन**

**रजवाँस, सागर (मध्यप्रदेश)**



प्रकाशक

**पं. श्री कपूरचन्द्र जैन स्मृति न्यास**

रजवाँस, सागर (मध्यप्रदेश)

श्री शान्तिदास प्रणीत संस्कृत शान्तिनाथ विधान का पद्यानुवाद


| | | |
|---|---|---|
| कृति | : | श्री शान्तिनाथ मण्डल विधान |
| रचयिता | : | श्री ताराचन्द्र जैन |
| सरलार्थ | : | पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन<br>रजवाँस, सागर (मध्यप्रदेश) |
| संस्करण | : | प्रथम, जून, २०२० |
| आवृत्ति | : | २२०० प्रतियाँ |
| मूल्य | : | ३०/- |
| प्राप्ति स्थान | : | डॉ. भरतकुमार जैन शास्त्री<br>५७८, सेक्टर ए, महालक्ष्मी नगर<br>इन्दौर ४०५ ०२० (मध्यप्रदेश)<br><br>धर्मोदय विद्यापीठ<br>सागर (मध्यप्रदेश) ७५८२-९८६-२२२<br><br>सत्साहित्य विक्रय केन्द्र<br>दिगम्बर जैन पंच बालयति मंदिर<br>इन्दौर ४०५ ०२० (मध्यप्रदेश) |
| मुद्रक | : | विकास ऑफसेट, भोपाल |

**स्वदोष शान्त्या विहितात्म शान्तिः, शान्ते र्विधाता शरणं गतानाम्।**
**भूयाद्भव क्लेश भयोप शान्त्यैः, शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः॥५॥**

रागादि दोषों की शान्ति से जिन्हें आत्म-शान्ति की प्राप्ति हुई है, जो शरण में आये हुए जीवों को शान्ति करने वाले हैं, जो कर्मरूपी शत्रुओं को जीतने वाले हैं, विशिष्ट ज्ञान अथवा लोकोत्तर ऐश्वर्य से सहित हैं तथा शरण देने में निपुण हैं। वे श्री शान्तिनाथ भगवान् मेरे संसार-परिभ्रमण, क्लेशों और भयों की शान्ति के लिए शरण हैं।

ऐसे श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजन, आराधना, भक्ति, स्तुति आदि अशुभ कर्मों को नष्ट करने वाली, विघ्नों को शान्त करने वाली एवं सुख-समृद्धि प्रदान करने वाली होती है। श्री शान्तिनाथ भगवान् का विधान दोषों का शमन तो करता ही है साथ ही जाने अनजाने में हो जाने वाले दोषों के प्रायश्चित स्वरूप यह विधान किया जाता है।

शोक, पातक आदि होने पर प्रायश्चित के रूप में, विवाह आदि मांगलिक कार्यों की सानन्द समाप्ति के लिए मांगलीक के रूप में, विघ्नों के आने पर उनके शमनार्थ, मंदिर, वेदी, कलशा एवं शिखर के क्षतिग्रस्त होने पर, जीर्णोद्धार के समय, मंदिर आदि में अशुद्धि होने पर, प्रतिमा खण्डित होने पर या अविनय होने पर एवं जाने अनजाने में पापादि कार्य होने पर श्री शान्तिनाथ विधान करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति कोदोषों के निराकरणार्थ इसे अवष्य करना चाहिए।

संस्कृत में इस विधान की रचना मुनिश्री सकलकीर्ति के शिष्य ब्र. श्री जिनदास जी और ब्र. श्री जिनदास जी के शिष्य ब्र. श्री शान्तिदास जी ने की है। वर्तमान की अनेक कृतियों में लेखक का नाम श्री जिनदास जी मिलता है किन्तु संस्कृत शान्ति विधान की प्रशस्ति देखने से विदित होता है कि इस विधान के मूल लेखक ब्र. श्री शान्तिदास जी हैं।

संस्कृत शान्ति विधान ब्र. श्री जिनदास जी, व ब्र. श्री शान्तिदास जी का अलग-अलग हो सकता जो शोध का विषय है। प्रशस्ति इस प्रकार है-

सकलकीर्ति महामुनि नायकम्, सकलदिग्तटधीजन मान्यकम्।
सकल येन कृतं सुकवित्वकम्, सकल भव्यजनस्य सुखदायकम्।

तच्छिष्य- जिनदास साधिता परमादरात्,
सेवाभक्तिसुभावेन कृतसिद्धिगुरोः कृपा।। ७।।
तत् प्रभावेण दिक्चक्रं विद्वान्सर्वोपि मानितः।
रचितंरासिभाषादि पुराण संस्कृतादिकम् ।।८।।
तस्य शिष्यमहामंदबुद्धिः केवलबालकः।
छंदं पिंगलव्याकरणं धातुरूपादिकं न मे।।९।।
शान्तिदासेति प्रख्यातोनिबुद्धिश्च सभाजिरे।
सत्कविः पटुमतिर्विद्वान् हास्यं कृत्वा मुहुर्मुहुः।।१०।। आदि।

इसका हिन्दी पद्यानुवाद पं. श्री ताराचन्द्र जैन शास्त्री, रेवाड़ी ने किया है। आप मूलतः बीना (सागर) के निवासी थे। आपका जन्म २५ अक्टूम्बर सन् १९२२ में हुआ। आप १९४८ में रेवाड़ी की शिक्षण संस्था जैन हाई स्कूल में संसकृत, हिन्दी तथा नैतिक शिक्षा के अध्यापन के आये थे। अध्यापन कार्य के साथ-साथ रेवाड़ी में नित्य प्रति शास्त्र स्वाध्याय और समाज को संस्कारित करने का कार्य भी करते थे। आप के द्वारा लिखा गया यह विधान आज सम्पूर्ण भारतवर्ष में पूर्ण श्रद्धा भक्ति से किया जाता है।

इसके अनेक प्रसंगों एवं कठिन शब्दों में जिज्ञासाएँ उत्पन्न होती रहती थी अतः सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि के महामंत्री देशव्रती श्री भागचन्द्र जैन, पीली दुकान ने मुझे इस विधान का अनुवाद करने की प्रेरणा दी। मैंने कोरोना काल में समय निकाल कर अपनी अल्प-बुद्धि से इस विधान का अनुवाद किया है। इसके अनेक छन्दों में एक शब्द के अनेक अर्थ भी हो सकते हैं किन्तु मैंने प्रसंगवश जहाँ जो आवश्यक लगा उसे लिखा है। विधान में अनेक छन्द ऐसे भी हैं, जिनके अन्य अर्थ भी निकल सकते हैं, उन्हें कृपा कर सुधीजन उचित समझकर सुधार लें और जहाँ मुझसे चूक हुई हो, उसे ठीक करके अवगत करायें।

इस विधान के संस्कृत और हिन्दी रूपान्तर में एक बार ही स्थापना, अष्टक आदि दिया है, किन्तु कालान्तर में अनेक प्रकाशनों में चारों वलयों में अलग-अलग स्थापना प्रकाशित होना प्रारंभ हो गया। जिसका अनुकरण प्रायः अनेक स्थानों पर होने लगा। जो विचारणीय है।

१. स्थापना के बाद अष्टद्रव्य से पूजन होती है। जबकि वलयों में स्थापना के बाद अष्टक नहीं अपितु अर्घ्यावली शुरु हो जाती है।

२. भगवान् का आह्वान, स्थापना और सन्निधिकरण करने के बाद बिना विसर्जन किए पुनः पुनः आह्वान, स्थापना करते हैं, जो उचित प्रतीत नहीं होता है।

३. एक बार आह्वान, स्थापना के बाद अष्टक और अर्घ्यावली उपरान्त जयमाला दी गई है, यही उचित है अतः मूल परम्परा का अनुकरण करते हुए इस कृति में एक बार ही आह्वान, स्थापना दिया जा रहा है। अनेक विद्वानों का मत भी इस विधि की पुष्टि करता है।

**विधान की विधि**—श्री शान्तिनाथ विधान को दो प्रकार से किया जा सकता है। **१. सामान्य विधि**—दोष-निवारण, पाप-प्रक्षालन एवं परिणाम-विशुद्धि हेतु या प्रायश्चित विधान के रूप में योग्य समय का निर्धारण कर, मण्डल बनाकर, दीपक और मंगल कलश स्थापित करके विधान करें पश्चात् जाप-पूर्वक समापन करें।

**२. विशेष विधि**—विघ्न बाधाओं के शमनार्थ, महामारी, दुर्भिक्ष आदि आपत्तियों के समय मानव-कल्याण की भावना एवं आत्मोत्थान के लिए किया जाता है। इसे किसी भी माह के सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से पूर्णिमा तक प्रतिदिन विधान किया जाता है।

इसे मण्डल बनाकर, ध्वजारोहण, घटयात्रा, सकलीकरण, इन्द्रप्रतिष्ठा, मण्डप-प्रतिष्ठा, दीपक और मंगल कलश स्थापना करके शान्तिमंत्र जाप्यानुष्ठान पूर्वक करना चाहिए। अन्त में जाप्य की दशांश आहूति पूर्वक शान्ति हवन करें। जाप्य मंत्र—

**१. ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।**

**२.ॐ ह्रीं जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव-शान्तिं कुरु कुरु ह्रीं नमः स्वाहा।**

इस अर्थ सहित श्री शान्तिनाथ विधान से पूजकों, आराधकों एवं विधान कर्ताओं को छन्दों के विषय और भावों की भासना होने से भावों की विशुद्धि होगी तभी हमारी भावना और श्रम सार्थक होगा।

पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन
रजवाँस, सागर म. प्र.

## अक्षर, बीजाक्षर और पिण्डाक्षर

मनुष्यों को भावाभिव्यक्ति का सौभाग्य प्राप्त है परन्तु इससे सभी भावोंको व्यक्त करना संभव नहीं होता है। बोली में भाषा भिन्न-भिन्न हो सकती है किन्तु भावों में कोई भिन्ता नहीं होती है। हर्ष, विषाद, सुख दुःख के शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता इसकीकोई भाषा नहीं होती है।

एक इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक सभीमें वेदना सुख दुःख की अनुभूति होती है पर अनुभूति मन का विषय है, मन रहित प्राणी भी भावाभिव्यक्ति तो करता ही है। जैसे जल,वृक्ष आदि पर शाब्दिक, एवं मांत्रिक प्रयोग हुए हैं। जिससे सिद्ध हुआ कि ये क्रिया प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। जो विचारणीय है।

मनुष्य अपनी भावना कामना इच्छा की पूर्ति करना चाहता है। चाहेवह लौकिक हो या पारलौकिक। जहाँ लौकिक की प्राप्ति संसार बढ़ाती हैवहीं पारलौकिक की प्राप्तिसंसार घटाती है, इसलिए जैन दर्शन में निष्काम भक्ति गुणों की आराधना को श्रेष्ठता दी गई है।

आचार्यों ने दाणं पूया मुक्खं से गृहस्थ को भगवान की आराधना एवं श्रमणों को दान का निर्देश दिया है इनकों भाव समर्पण एवं निष्ठा से किया जाय तो पाप का निष्कासन एवं शुभ का आगमन होता है। जिससे जीवन मंगलमय सुखमय एवं शान्तिमय होता है।

अशान्ति, असाता, अमंगल के समय प्राणी इनसे छुटकारा पानेके लिए वीतराग भगवान की शरण में आकर अपनी व्यथा अपनी भाषा में व्यक्त करता है।

भाषा का सृजन अक्षरों से एवं मंत्रों सृजन बीजाक्षरों से होता है तथा बीजाक्षरों के समूह से पिण्डाक्षरों सृजन होता है। मूल अक्षर सिद्धों के समान होते हैं, इनका कभी क्षरण नहीं होता है। इनकी संरचना पुद्गल परमाणुओं से होती है। जिससे इनको रंग, रस, रूप, स्पर्श आदि गुणों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है।

अ आ, क ख, च छ आदि वर्गों में पृथ्वी, जल, अग्निवायु, आकाश बीज रूप में ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र वर्ण रूप में इनके रक्षक विद्यादि देवों में, इनके विडाल, मूषक, सिंह स्वभाव रूप में, सुधाक्षर, ब्रह्माक्षर, पंच देव, नौतत्त्व, त्रिशान्ति, लौकिक एवं पारलौकिक साधन की सिद्धि रूप में भी परिभाषित किया गया है।

मंत्रों की संरचना में युग्माक्षरों से विशेष बीजाक्षरों को वेष्ठित करके वज्र, पल्लव रूप में शक्तिशाली बनाया जाता है। इनके तीक्ष्ण प्रभाव के लिए इन्हें जागृत भी किया जाता है। जिससे इनकी शक्ति कई गुणा बढ़ जाती है। साधना के लिए सात्त्विक भोजन, संयम साधना, तपश्चरण, मानसिक संतोष, विवेक, श्रद्धा, दीर्घकालिक समर्पण की अनिवार्यता है।

अक्षरों, एवं बीजाक्षरों में सृजित पूजा, विधान स्वाध्याय एवं मंत्र साधना हमारे अशुभ अमंगल को हटाने का श्रेष्ठ माध्यम है। पूजा विधान में सामान्य जन, विद्वान्, महिला, पुरुष एवं बच्चे भी धर्माराधना कर सकते हैं। इस हेतु संतों ने कई प्रकार के विधानों को सृजित किया है। इनमें शान्ति विधान का विशेष महत्त्व है। शान्तिविधान में पंचम चक्रवर्ती, बारहवें कामदेव एवं सोलहवें तीर्थंकर के गुणों के साथ अर्हंत परमेष्ठी के मूल गुणों, तीनों काल के पंचपरमेष्ठियों की आराधना से संसार में होने वाली समस्त विपत्तियों का निराकरण मिलता है।

शान्ति विधान हिन्दी,संस्कृत, कन्नड़, तमिल, मराठी आदि सभी भाषाओं में लिखा गया है इसके मंत्रों में विशेष बीजाक्षरों, पिण्डाक्षरों का प्रयोग भजनीय है। पूजा में तीर्थंकर भगवान के अष्ट प्रातिहार्य, मूलगुण को विशेष महत्त्व दिया गया है।

प्रथम समुच्चय पूजा में अष्टप्रातिहार्य के मूल बीजाक्षर यथा अशोकवृक्ष हं, सुरपुष्पवृष्टि भं, दिव्यध्वनि मं, चवर रं, सिंहासनघं, भामण्डल झं, दुन्दुभि सं, छत्रत्रय खं, एवं जल चन्दनादि समर्पण में क्रमशः इन्हीं बीजाक्षरों के पंच युग्म या पंचाक्षर रूप प्रयोग अन्य विधानों में दृष्टव्य नहीं हैं। ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः, भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः आदि।

प्रथम वलय की अर्घ्यावली में अष्टप्रातिहार्य के मूल बीजाक्षरों का पिण्डाक्षरों रूप प्रयोग भी अद्‌भुत प्रभावशाली है। ह्म्ल्व्र्यूं, भ्म्ल्व्र्यूं आदि। द्वितीय वलय की अर्घ्यावली में त्रिकाल पंचपरमेष्ठी आराधना के साथ विशेष मंत्रों का प्रयोग भी विलक्षण है। जिसमें कर्म क्षय एवं निदान बन्ध रूप पाप के शमन में विशिष्ट बीजाक्षरों का प्रयोग अद्‌भुत है।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत-विदेहादि-शतैक-सप्तति-क्षेत्रार्यखण्डे भूत-भविष्यत्-वर्तमान सर्वार्हत्परमेष्ठि-पदपंकजे सन्मति-सद्‌भक्त्युपेता-मलतर-खड्गोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...। शान्ति विधान में इन विशेष अक्षरों, बीजाक्षरों, पिण्डाक्षरों के स्पष्ट एवं शुद्ध उच्चारण अनिवार्य हैं। तभी इन बीजाक्षरों की शक्ति ऊर्जा का प्रभाव करने एवं सुनने वाले को लाभान्वित करेगा। एकाग्रता पूर्वक इन बीजाक्षरों का सम्यक् उच्चारण हमारे संवर एवं निर्जरा का प्रबल निमित्त बनकर भीषणसे भीषण आपदा संकट को हटाने में सक्षम होता है।

यहाँ हम केवल पिण्डाक्षरों के विन्यास पर दृष्टिपात करते हैं ह्म्ल्व्र्यूं - ह् म् ल् व् र् य् र् ऊं इनका उच्चारण अत्यन्त कठिन एवं जटिल है। किन्तु अभ्यास करने पर इन अर्धाक्षरों का सही उच्चाराण किसी भाषाविद् के माध्यम से सीखना श्रेयस्कर है।

पं.सनतकुमार विनोदकुमार जैन रजवाँस मौन साधक, आराधक एवं जिनवाणी की सेवा समर्पित भाव से करते हैं आपने सिद्धचक्रविधान, पं. वृन्दावन लाल जी कृत चौबीसी विधान के साथ शान्ति विधान में प्रयुक्त क्लिष्ट एवं विशिष्ट मंत्र, बीजाक्षरों का विवेचन करके सभी को उपकृत किया है।

आप सदैव इसी प्रकार माँ जिनवाणीके कोष को अक्षुण्ण बनाते रहें। इसी मंगल भावना के साथ -

श्रुत पंचमी २०२० ब्र. जयकुमार जैन निशान्त टीकमगढ

महामन्त्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद्

# श्री शान्तिनाथ विधान

## प्रस्तावना

**अरिहन्त जिनेश्वर की अनुपम छवि, शान्ति सुधा धर के उर में।**
**शिवनाथ निरंजन कर्मजयी बन, जाय बसे प्रभु शिवपुर में ॥१॥**

**अर्थ**—अरिहन्त जिनेन्द्र भगवान् की उपमा रहित वीतराग शान्तमुद्रा रूपी अमृत को हृदय में धारण करता हूँ। हे मोक्ष के स्वामी, विकारों से रहित, कर्मों को जीत कर मोक्ष रूपी नगर में निवास करने लगे हैं। वे सिद्ध परमेष्ठी हैं।

**मुनिनाथ तपोनिधि सूरि सुधी, तपलीन रहें नित ही वन में।**
**श्रुत - ज्ञान - सुधा बरसावत हैं गुरु पाठकवृन्द सुभव्यन में ॥२॥**

**अर्थ**—मुनियों के स्वामी, तपों के भण्डार, श्रेष्ठज्ञानी, तप में लीन, हमेशा वन में निवास करते हैं। वे आचार्य परमेष्ठी हैं। द्वादशांग श्रुत ज्ञान रूपी अमृत की भव्य जीवों पर वर्षा करने वाले गुरु उपाध्याय परमेष्ठी हैं।

**रत्नत्रय की चिर ज्योति जगे, तप - ज्वाला कर्म विनाश करे।**
**भव - भोग शरीर विरक्त सदा, इन्द्रिय सुख की नहिं आश करें**
**॥ ३ ॥**

**अर्थ**—जिनके अन्दर रत्नत्रय की शाश्वत ज्योति जग गई है, तप की अग्नि से जो कर्मों को जला रहे हैं, संसार, शरीर और भोगों से जो हमेशा विरक्त रहते हैं, जिन्हें इन्द्रिय सुख प्राप्ति की अभिलाषा, इच्छा आदि नहीं है, वे साधु परमेष्ठी हैं।

**गन्धकुटी में विराजित प्रभु हैं, दिव्यध्वनि उनकी तो खिरी।**
**गणराज ने गूँथ के ज्ञान - सुमन, द्वादश अंगों की माल वरी ॥४॥**

**अर्थ**—जो समवसरण में गन्धकुटी पर विराजमान होते हैं उन तीर्थंकर भगवान् की दिव्यध्वनि खिरती है। उनके ज्ञान रूपी पुष्पों की गणधर स्वामी द्वादशांग रूप माला बनाते हैं।

**मंगलमय लोक जिनोत्तम हैं, मंगलमय सिद्ध सनातन हैं।**
**मंगलमय सूरि सुवृत्त धनी, मंगलमय पाठक के गन हैं ॥५॥**

**अर्थ**—अरिहन्त भगवान् तीनों लोकों में मंगल स्वरूप एवं सर्वश्रेष्ठ हैं। अनन्तानन्त सिद्ध भगवान् मंगलमय हैं। चारित्र का पालन करने वाले आचार्य परमेष्ठी

मंगलस्वरूप हैं। उपाध्याय परमेष्ठी मंगलमय हैं।

**मंगलमय हैं साधु जन, ज्ञान सुधा रस लीन।**
**जिन प्रणीत वर धर्म है, मंगलमय स्वाधीन ॥६॥**

**अर्थ**—ज्ञानरूपी अमृत रस के आस्वादन में संलग्न साधु परमेष्ठी मंगल स्वरूप हैं। जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा कथित श्रेष्ठ, स्वाधीन धर्म मंगलमय है।

**सब द्वीपों के मध्य में, जम्बूद्वीप अनूप।**
**लवण नीर-निधि सर्वतः, जहाँ खातिका-रूप ॥७॥**

**अर्थ**—मध्यलोक में असंख्यात द्वीपों के बीच में अनुपम जम्बूद्वीप है। इसके चारों ओर खातिका के रूप में लवण समुद्र है।

**पीछे धातकि - द्वीप है, दुतिय द्वीप श्रुति सार।**
**कालोदधि चहुँ ओर है, परिखा के उनहार ॥८॥**

**अर्थ**—आगम ग्रन्थों में कहा है कि इसके आगे दूसरा धातकिखण्ड द्वीप है। जिसके चारों ओर खाई के समान कालोदधि समुद्र है।

**पुष्कर नामक द्वीप है, कालोदधि के पार।**
**ताको आधौ भाग ले, ढाईद्वीप सम्हार ॥९॥**

**अर्थ**—कालोदधि समुद्र के आगे पुष्करवर नामक द्वीप है। इसके आधे भाग सहित ढाई द्वीप कहा जाता है।

**ढाईद्वीप त्रिकाल के, असंख्यात जिनराज।**
**वन्दनीय जे लोक के, वन्दौं धर्म जहाज ॥१०॥**

**अर्थ**—इस ढाई द्वीप में तीनों काल के होने वाले असंख्यात जिनेन्द्र भगवान् तीनों लोकों में वन्दनीय हैं। संसार से पार उतारने के लिए जहाज के समान हैं, इनकी मैं वन्दना करता हूँ।

**चन्द्रकला सम ज्योति मनोहर, अंग प्रभु के राजत हैं।**
**पद्म पुनीत-प्रभा-सम उज्ज्वल, देह मनोज्ञ विराजत हैं ॥११॥**

**अर्थ**—हे भगवान् आपके अंग चन्द्रमा की किरणों के समान ज्योतिर्मय हैं। आप कमल की पवित्र प्रभा के समान उज्ज्वल एवं मन को अच्छे लगने

वाले शरीर से सहित विराजमान हैं।

**कण्ठ-मयूर सुकंचन नीरद, तुल्य सुशोभित अंग विभा।**
**तीर्थेश्वर चौबीस अलौकिक, रूप-विमुग्ध सुरेन्द्रसभा**
**॥ १ १ ॥**

**अर्थ**—मोर के कण्ठ, श्रेष्ठ स्वर्ण एवं पानी से लदे बादलों के समान जिनके अंग शोभायमान हो रहे हैं ऐसे चौबीस तीर्थंकरों के अलौकिक रूप को देखकर सौधर्म इन्द्र सभा भी मोहित हो जाती है।

**भूत भविष्यत वर्तमान के, चौबीसों जिनराज।**
**रत्नत्रय से भूषित अनुपम, जग में रहे विराज ॥१२॥**

**अर्थ**—भूतकाल, भविष्यकाल और वर्तमानकाल के अनुपम रत्नत्रय से सहित संसार में चौबीसों तीर्थंकर विराजमान हैं।

**अरिहन्त सिद्ध त्रिलोक पूजित, धर्मध्वज आचार्य को।**
**मुनिवृन्द के शिक्षाप्रदायक, पूज्यपाठक आर्य को ॥१३॥**

**अर्थ**—तीनों लोकों में पूज्य अरिहन्त और सिद्ध भगवान्, धर्मध्वज स्वरूप आचार्य परमेष्ठी एवं मुनिराजों को शिक्षा प्रदान करने वाले पूज्य उपाध्याय परमेष्ठी को।

**उन साधुओं को जो निरन्तर, ज्ञान - ध्यान - प्रवीन हैं।**
**तप शान्ति की शुचि साधना में, जो सदा तल्लीन हैं ॥१४॥**

**अर्थ**—जो हमेशा ध्यान और अध्ययन में कुशल हैं एवं तप और शान्ति की साधना में संलग्न हैं उन साधुओं आदि।

**करके प्रणाम त्रियोग से मैं, शान्तिनाथ विधान को।**
**प्रारंभ करता हूँ बढ़ाने, भक्ति - श्रद्धा - ज्ञान को ॥१५॥**

**अर्थ**—पंचपरमेष्ठी को मन, वच, काय से प्रणाम करके श्रद्धा, भक्ति और ज्ञान को बढ़ाने के लिए मैं शान्तिनाथ विधान को प्रारंभ करता हूँ।

**लोक के सब गणधरों को, भक्ति श्रद्धा भाव से।**
**कुन्दकुन्दादिक दिगम्बर, मुनिवरों को चाव से ॥१६॥**

**अर्थ**—ढाई द्वीप के समस्त गणधरों एवं श्री कुन्दकुन्द स्वामी आदि सभी

दिगम्बर मुनिराजों को श्रद्धा, भक्ति भाव से रुचि पूर्वक।

**करता प्रणाम विनय सहित मैं, धर्म की हो नित विजय।**
**निर्विघ्न हो यह पाठ पूरा, है यही मेरी विनय ॥१७॥**

**अर्थ**—विनय सहित प्रणाम करता हूँ। यह शान्तिनाथ विधान निर्विघ्न पूर्ण हो मेरी ऐसी विनती है। धर्म की हमेशा जय हो।

**शान्तिनाथ भगवान् के, गुण हैं अपरम्पार।**
**वाचस्पति वर्णन करें, तो भी पायें न पार ॥१८॥**

**अर्थ**—श्री शान्तिनाथ भगवान् के अनन्त गुण हैं जिन्हें गणधर भी वर्णन करें तो भी पूर्ण कथन नहीं कर सकते हैं।

## शान्तिनाथ विधान का फल

**यह शान्तिनाथ विधान किसने, कब कहाँ क्यों कर किया।**
**फल प्राप्ति जो उसको हुई, नरभव सफल उसने किया ॥१॥**

**अर्थ**—इस शान्तिनाथ विधान को किसने, कब, कहाँ, क्यों, और किसलिए किया। इससे उनको जिस फल की प्राप्ति हुई उससे उनका मनुष्य भव सफल हो गया है।

**वृत्तान्त उसका मैं प्रसंग सहित यहाँ वर्णन करूँ ।**
**कल्याण हो सुनकर जगत का, ध्यान यह मन में धरूँ ॥२॥**

**अर्थ**—इसका प्रसंग सहित यहाँ वर्णन कर रहा हूँ मेरा ऐसा भाव है कि जिसको सुनकर समस्त भव्य जीवों का कल्याण हो।

**भरत-क्षेत्र के आर्य - खण्ड में, भारत भू विख्यात सुदेश।**
**मथुरा नगर वहाँ का शासक, सूर्यवंश का तिलक नरेश ॥३॥**

**अर्थ**—जम्बूद्वीप के दक्षिण में भरतक्षेत्र है। इसके आर्यखण्ड में भारत देश है, इसमें सुप्रसिद्ध मथुरा नगर है। यहाँ सूर्य-वंश के तिलक-स्वरूप श्रेष्ठ राजा राज्य करता था।

**राजनीति में निपुण न्यायप्रिय, वीर प्रजा का पालक भूप।**
**साम-दाम के दण्ड भेद से, शासन - संचालक अनुरूप ॥४॥**

**अर्थ**—वह राजा राजनीति में कुशल, न्यायप्रिय,बलवान, प्रजा का पालन करने वाला, साम, दाम, दण्ड, भेद की कुशल नीति के अनुसार शासन का संचालन करता था।

**एक बार जब दैवयोग से, दुर्विपाक ने किया प्रकोप।**
**ग्राम देवता ने क्रोधित हो, किया उपद्रव शान्ति विलोप ॥५॥**

**अर्थ**—एक बार अकस्मात अशुभ कर्म के उदय से कुपित होकर ग्राम देवता ने गुस्से में आकर शान्ति को नष्ट कर घोर उपद्रव किया।

**महाभयंकर व्याधि विषम अति, फैलाई जब किन्नर ने।**
**दिन-प्रतिदिन अतिप्रबल वेग से, लोग लगे प्रतिदिन मरने ॥६॥**

**अर्थ**—उस किन्नर जाति के देव ने अत्यन्त महा भयंकर असाध्य रोग फैलाया। जिससे प्रतिदिन शीघ्रता पूर्वक लोग मरने लगे।

**रोग प्रताड़ित हो जनता अरु, शासक ने मथुरा छोड़ी।**
**व्याधी ने कालकृपाण लिए, सब जन की हिम्मत तोड़ी ॥७॥**

**अर्थ**—रोग से परेशान होकर राजा और प्रजा ने मथुरा नगर छोड़ दिया। रोग ने मृत्यु रूपी तलवार से सभी लोगों का आत्म बल समाप्त कर दिया।

**शुक्ल त्रयोदशी के दिन सहसा, सेठ सुमति वहाँ आए।**
**बादल वर्षा देख सर्वतः, मन में अति ही हर्षाए ॥८॥**

**अर्थ**—शुक्ल पक्ष की तेरस को सुमति नाम के एक सेठ मथुरा नगर में आये। यहाँ पर सभी जगह वर्षा हो रही थी उसे देखकर उनका मन हर्षित हुआ।

**मथुरा नगरी में प्रवेश कर, मिले नहीं तहाँ नर - नारी।**
**सूनी नगरी देख - सुमति तब, हुए दुखित मन में भारी ॥९॥**

**अर्थ**—सेठ सुमति ने मथुरा नगर में प्रवेश किया वहाँ उन्हें कोई भी स्त्री, पुरुष नहीं मिले। पूरे सुनसान नगर को देखकर उन्हें अत्यन्त दुःख हुआ।

**देख जिनालय, पूज जिनेश्वर, मुनि नायक के युग वन्दे।**
**दर्शन वन्दन भक्ति विनय कर, निज मन में अति आनन्दे ॥१०॥**

**अर्थ**—मथुरा नगर के विशाल जिन मंदिर में जिनेन्द्र भगवान् की पूजा की

और वहाँ विराजमान आचार्य संघ की वन्दना की। दर्शन, वन्दन, भक्ति, विनय कर अपने मन में अत्यन्त प्रसन्न हुये।

**प्रश्न किया तब सेठ सुमति ने, नाथ उपाय बता दीजे।**
**होगी शान्ति मुनीश्वर कैसे? विधिपूर्वक समझा दीजे ॥११॥**

**अर्थ**—सेठ सुमति ने आचार्यश्री से पूछा कि इस सुनसान नगर में पुनः नर नारियों का निवास कैसे होगा, कैसे शान्ति होगी मुझे विधि पूर्वक समझा दीजिए।

**चारण ऋद्धिधारी मुनिवर, कहे वचन अति सुखदाई।**
**शान्तिनाथ जिन शान्ति विधायक, पूज रचो मन हर्षाई ॥१२॥**

**अर्थ**—उन चारणऋद्धिधारी मुनिराज ने सुख को उत्पन्न करने वाले वचनों द्वारा कहा कि शान्ति को करने वाले श्री शान्तिनाथ विधान को अत्यन्त हर्षित भाव पूर्वक करो।

**मंत्रोच्चार**

**ॐ नमोऽर्हते भगवते श्री शान्तिनाथाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अमुकस्य सर्वोपद्रवशान्तिं लक्ष्मीलाभं च कुरु कुरु नमः** (स्वाहा)।

## विधान के जाप मंत्र का फल

**इस मन्त्र राज के जपने से, मन शुद्ध शान्त हो जाता है।**
**होते हैं विघ्न विनष्ट सभी, शुभ पुण्यकोष भर जाता है ॥१३॥**

**अर्थ**—इस श्रेष्ठ मंत्र के जाप करने से मन पवित्र और शान्त हो जाता है। सभी विघ्न बाधाएँ समूल नष्ट हो जाती हैं और पुण्य के भण्डार भर जाते हैं।

**धन सम्पति अधिकार प्राप्त हो, यह तो है साधारण बात।**
**मन मन्दिर में ज्ञान सूर्य का, होता उज्ज्वल दिव्य प्रभात ॥१४॥**

**अर्थ**—धन, सम्पत्ति, वैभव आदि प्राप्त होना तो सामान्य कार्य है। इस मंत्र के जाप से मन रूपी मंदिर केवलज्ञान रूपी सूर्य के दिव्य, उज्ज्वल, प्रकाश से आलोकित हो जाता है।

## विधान का समय

**इसका विधि विधान हे भव्यो, सुनो शुद्ध मन से धर ध्यान।**
**सोलह दिवसी शुक्लपक्ष में, प्रथम दिवस से करो विधान ॥१५॥**

**अर्थ**—हे भव्य जीवो इस विधान को करने की विधि शुद्ध मन से ध्यान लगा कर सुनो, जब किसी माह का शुक्लपक्ष सोलह दिन का हो उस शुक्लपक्ष में प्रथम दिन से यह विधान करना चाहिए।

**जिन पूजा के पूर्व यन्त्र का, संस्थापन पूजन शुभ कार्य।**
**सहसमन्त्र का जाप करो नित, षोडस दिन तक सुविधि सुआर्य ॥ १ ६ ॥**

**अर्थ**—विधान के पहले अनुष्ठान पूर्वक यन्त्र की स्थापना करके प्रतिदिन एक हजार मंत्रों का जाप सोलह दिन तक सम्यक् विधि से करना चाहिए।

**पूजा के महा विधान में, दीप धूप फल पुष्प सुगन्ध।**
**भक्ति-भावयुत करो समर्पित, अशुभकर्म का होय न बन्ध ॥१७॥**

**अर्थ**—इस शान्तिनाथ महा मण्डल विधान में दीप, धूप, फल, पुष्प एवं चन्दन आदि अष्ट-द्रव्य भक्ति-भाव पूर्वक समर्पित करने से अशुभ कर्म का बन्ध नहीं होता है।

## श्री शान्तिनाथ स्तवन

**संसार सागर में भटकते, प्राणियों को हे प्रभो!**
**आपके ही युग चरण शुभ, शरण दे सकते विभो ॥**
**दावाग्नि दुख - सन्ताप की, सर्वत्र धू - धू जल रही।**
**अनुराग माया मोह की छलना निरन्तर छल रही ॥१॥**

**अर्थ**—हे भगवान् संसार में भ्रमण करने वाले भव्य जीवों को आपके दोनों चरण ही श्रेष्ठ शरण देने में समर्थ हैं। दुःख रूपी जंगल में सभी जगह दुःख के ताप को उत्पन्न करने वाली अग्नि धू-धू कर जल रही है। राग, द्वेष, माया और मोह के छल कपट से हमेशा लगातार छले जा रहे हैं।

**क्रोधित भुजंगम के डसे, बहु प्राणियों के गात्र में।**
**गारुड़ी-विद्या प्रशम करती, है यथा क्षण मात्र में ॥**

**प्रभु आपके चरणाम्बुजों का, ध्यान करते भक्ति से।**
**सब विघ्न बाधाएँ विलय, होतीं निजातम शक्ति से ॥२॥**

**अर्थ**—जिस प्रकार क्रोधित सर्प के डँसने से बहुत प्राणियों के शरीर का विष गारुड़ी विद्या एक क्षण में समाप्त कर देती है। उसी प्रकार हे भगवान् आपके चरण कमलों का भक्तिपूर्वक ध्यान करने से जो अपनी आत्मा में शक्ति उत्पन्न होती है उससे समस्त विघ्न बाधाओं का समूह एक क्षण में समाप्त हो जाता है।

गीता छंद

**तप्त स्वर्ण के तुल्य आपके, दिव्यचरण का निर्मल ध्यान।**
**भव-सागर में पड़े प्राणियों, के तारण हित बनता यान ॥**
**ज्यों यामिनी के घन - तिमिर में, लुप्त भू - आलोक हो।**
**उद्यद् दिवाकर रश्मियाँ, करतीं प्रकाशित लोक को ॥३॥**

**अर्थ**—गर्म किए हुए सोने के समान आपके सुन्दर चरणों का ध्यान, संसार समुद्र में डूबते हुए जीवों को पार लगाने के लिए जहाज बन जाता हैं। जिस प्रकार रात्रि के घोर अंधकार में लुप्त, अदृश्य पृथ्वी को सूर्य प्रकाशित करता है उसी प्रकार आपके केवलज्ञान रूपी सूर्य की किरणों से तीनों लोक प्रकाशित होते हैं।

**जब तक नहीं होता उदय, रवि रश्मि का संसार में।**
**तब तक कमलश्री सुप्त रहती, है सतत कासार में ॥**
**जब तक नहीं होती कृपा, भगवान् के युगचरण की।**
**तब तक नहीं यह टूटती, जंजीर जीवन - मरण की ॥४॥**

**अर्थ**—जब तक संसार में सूर्य का उदय नहीं होता तब तक सरोवर में कमल खिलता नहीं है। हे भगवान् जब तक आपके दोनों चरणों की कृपा नहीं होती तब तक संसार में जन्म-मरण का क्रम समाप्त नहीं होता है।

**समरत्थ लोक - अलोक के, विज्ञान में जिनवर प्रभो।**
**त्रयछत्र की सुषमा विराजित, ज्ञान में दिनकर प्रभो ॥**
**हों पापक्षय क्षणमात्र में, पदपद्म के गुणगान से।**
**दर्पान्ध सिंह - गजेन्द्र भागे, सहज जिनके ध्यान से ॥५॥**

**अर्थ**—हे भगवान् लोक और अलोक के स्वरूप को जानने की शक्ति आप में ही है। आप तीन छत्र की सुन्दरता सहित ज्ञान सूर्य के समान विराजमान हैं। आपके चरणकमलों का गुणगान करने से एक क्षण में पाप समूह नष्ट हो जाते हैं। जिस प्रकार बड़े-बड़े हाथी, क्रोधित सिंह से भयभीत होकर भाग जाते हैं उसी प्रकार आपका ध्यान करने से सभी पाप सहज ही भाग जाते हैं।

**प्रत्यूष बेला के ललित उज्ज्वल, दिवाकर सा विमल।**
**जिननाथ भा-मण्डल तुम्हारा, सोहता स्वर्णिम कमल ॥**
**दिव्यांगनाओं के नयन मन, कर प्रफुल्लित मोहता।**
**त्रैलोक्य के तम - तोम को, करता विदूरित सोहता ॥६॥**

**अर्थ**—प्रातःकाल के सुन्दर, स्वच्छ, निर्मल सूर्य के समान जिनेन्द्र भगवान् का भामण्डल सोने के कमल की तरह शोभायमान होता है। जिस प्रकार स्वर्ग की अप्सराओं के नेत्र मन को प्रसन्न कर उन्हें मोहित करते हैं। उसी प्रकार तीनों लोक के अंधकार को नष्ट करता हुआ आपका भामण्डल शोभायमान होता है।

**बाधारहित शाश्वत निराकुल, अन्यतम सुख सम्पदा।**
**नाथ के चरणारविन्दों, के समागम से सदा ॥**
**प्राप्त करते भक्त जन हैं, भक्ति के आधार से।**
**आश्चर्य क्या यदि पार हों, संसार - पारावार से ॥७॥**

**अर्थ**—विघ्न बाधाओं से रहित, शाश्वत, आकुलता रहित, बहुत पदार्थों में से एक सुख रूपी वैभव हमेशा हे भगवान् चरण-कमलों के समागम से भक्त जन प्राप्त कर लेते हैं और यदि आपकी भक्ति के द्वारा दुःखमय अपार संसार से पार हो जाएँ तो क्या आश्चर्य है?

**हे शान्तिनाथ जिनेन्द्र तेरे, भक्त नित पाते कृपा।**
**भवदुःख से सन्तप्त जन के, हेतु बन जाती प्रपा ॥**
**दूर होते दुःख - दारुण, नाथ की शुभ भक्ति से।**
**ज्यों घनतिमिर विध्वस्त होता, रविकिरण की शक्ति से ॥८॥**

**अर्थ**—हे शान्तिनाथ भगवान् आपके भक्त हमेशा आपकी कृपा प्राप्त करते

हैं। जो संसार दुःख के ताप से दुःखीजनों के लिए शीतल जल का स्थान बन जाती है। आपकी भक्ति से भयंकर दुःख भी नष्ट हो जाते हैं। जिस प्रकार सूर्य की किरणों के प्रकाश से सघन अन्धकार नष्ट हो जाता है।

**श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र के, इस संस्तवन को भाव से।**
**जो भव्यजन पढ़ते निरन्तर, हैं विनय से चाव से॥**
**परिणाम उनके हो विमल, सब विघ्न बाधाएँ टलें।**
**कल्याण मन्दिर के पथिक वे, मुक्ति के पथ पर चलें॥९॥**

**अर्थ**—श्री शान्तिनाथ भगवान् के इस स्तवन को जो भव्य जीव विशुद्ध भाव से, विनय से एवं रुचि पूर्वक पढ़ते हैं। उनके परिणाम विशुद्ध हो जाते हैं, विघ्न बाधाएँ समाप्त हो जाती हैं, वे मोक्ष महल को प्राप्त करने के लिए मुक्ति के मार्ग पर चलने लगते हैं।

❑ ❑ ❑

## विधान प्रारम्भ

**हे शान्तिप्रभो! हे शान्तिप्रभो! मेरे मन - मन्दिर में आओ।**
**अघवर्ग विनाशन-हेतु प्रभो, निज शान्त दिव्य छवि दर्शाओ॥१॥**

**अर्थ**—हे शान्तिनाथ भगवान्! हे शान्तिनाथ प्रभु, पापों के समूह को नष्ट करने के लिए आप मेरे मन रूपी मंदिर में अपनी प्रशान्त, वीतराग सुन्दर मुद्रा का दर्शन कराइये।

**कर्मों के बन्धन खुलते हैं, प्रभु नाम निरन्तर जपने से।**
**भव-भोग-शरीर विनश्वर तब,क्षणभंगुर लगते सपने से॥२॥**

**अर्थ**—हे भगवान्! आपके नाम का हमेशा जाप करने से नाशवान संसार, शरीर और भोग क्षण भर में समाप्त होने वाले स्वप्न की तरह लगने लगते हैं।

**नरजन्म सफल हो जाता है, जब ध्यान हृदय में आता है।**
**आतमस्वरूप में लीन हुआ, भव - सागर से तर जाता है॥३॥**

**अर्थ**—जब आपका ध्यान करते तब यह मनुष्य भव सफल हो जाता है और आत्मा के स्वरूप में स्थित होकर संसार-समुद्र से पार हो जाता है।

**ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धनविमुक्त! सकलविघ्नशान्तिकर! मंगलप्रद! पंचमचक्रेश्वर! द्वादशमकामदेव! अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त! षोडशमतीर्थंकर! श्री शान्तिनाथभगवन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।**

**ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धनविमुक्त! सकलविघ्नशान्तिकर! मंगलप्रद! पंचमचक्रेश्वर! द्वादशमकामदेव! अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त! षोडशमतीर्थंकर! श्री शान्तिनाथभगवन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।**

**ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धनविमुक्त! सकलविघ्नशान्तिकर! मंगलप्रद! पंचमचक्रेश्वर! द्वादशमकामदेव! अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त! षोडशमतीर्थंकर! श्री शान्तिनाथभगवन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।**

अष्टकम्

**स्वर्ण कलश में जल ले जो, नित जिन पद पूजन करते हैं।**
**निश्चय ही वे राजतिलक की, अनमोल सम्पदा वरते हैं ॥१॥**

**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय जलं ...।**

**अर्थ**—सोने के कलशों में जल लेकर जो प्रतिदिन जिनेन्द्र भगवान् के चरण कमलों की पूजा करते हैं। वे निश्चित ही मोक्ष रूपी राज्य की अमूल्य सम्पत्ति को प्राप्त करते हैं।

**केसर कर्पूर चन्दन द्वारा, जिनवर के चरणों का अर्चन।**
**जो करते हैं स्वर्गों तक में, सुरभित होते हैं उनके तन ॥२॥**

**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय चन्दनं ...।**

**अर्थ**—केसर, कपूर और चन्दन के द्वारा जो जिनेन्द्र भगवान् के चरण कमलों की पूजा करते हैं। वे स्वर्ग के वैभव के साथ सुगंधित सुन्दर शरीर प्राप्त करते हैं।

**प्रभु के चरण कमल की पूजा, निर्मल अक्षत से करते।**
**कामदेव सा पा शरीर, वे दीर्घ आयु जीवन धरते ॥३॥**

**ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय अक्षतान् ...।**

**अर्थ**—निर्मल अक्षतों से के द्वारा जो जिनेन्द्र भगवान् के चरण कमलों की पूजा करते हैं। वे कामदेव के समान सुन्दर और स्वस्थ एवं पूर्ण आयु के साथ लम्बा जीवन प्राप्त करते हैं।

**जो कुन्द चमेली के द्वारा, करते प्रभु पद पंकज - पूजन।**

**वे पुष्पोत्तर विमान द्वारा, सम्पूर्ण सफल करते जीवन ॥४॥**

**ॐ रां रीं रूं रौं रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय पुष्पं ...।**

**अर्थ**—श्वेत चमेली के पुष्पों से जो जिनेन्द्र भगवान् के चरण कमलों की पूजा करते हैं। वे पुष्पोत्तर विमान प्राप्त कर अपना पूरा जीवन सफल करते हैं।

**उज्ज्वल स्वर्ण पात्र में लेकर, आज्य पक्व नैवेद्य विमल।**
**अर्पित करते प्रभु चरणों में, पा जाते कल्प वृक्ष के फल ॥५॥**

**ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय नैवेद्यं ...।**

**अर्थ**—चमकदार सोने के बर्तनों में घी से पके हुए शुद्ध पकवान जो जिनेन्द्र भगवान् के चरणों में समर्पित करते हैं, वे कल्पवृक्ष के फल प्राप्त करते हैं।

**उज्ज्वल कर्पूर दीप द्वारा, जिनवर की सौम्य आरती से।**
**उद्भासित केवल जोति जगे, उसमें सन्दीप्त भारती से ॥६॥**

**ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय दीपं ...।**

**अर्थ**—दीप्तिमान कपूर के दीपक से जो जिनेन्द्र भगवान् की सुन्दरता पूर्वक पूजन करते हैं। उनके केवलज्ञान ज्योति प्रकट होती है जिससे जिनवाणी प्रकाशित होती है।

**चन्दन कर्पूर धूप द्वारा, जिनवर की शुभ्र अर्चना से।**
**पाऊँ निरोगतन कान्तिमयी, प्रभु की निशि याम वन्दना से ॥७॥**

**ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय धूपं ...।**

**अर्थ**—चन्दन और कपूर आदि के द्वारा निर्मित धूप से जो जिनेन्द्र भगवान् की सम्यक् प्रकार से पूजा करते हैं और दिन-रात आपकी वन्दना करते हैं, वे रोग रहित, सौन्दर्य को बढ़ाने वाला शरीर प्राप्त करते हैं।

**श्रीफल कदली इत्यादिक से, श्री जिनके चरणों का पूजन।**
**वे मनवांछित फल पाते हैं, पूजन जो करते हैं भवि जन ॥८॥**

**ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय फलं ...।**

**अर्थ**—नरियल और केला आदि से जो भव्य प्राणी जिनेन्द्र भगवान् के चरणों की पूजन करते हैं वह मनोवांछित फल प्राप्त करते हैं।

**अष्टद्रव्यमय अर्घ्य विमल ले,शान्तिनाथ प्रभु का पूजन ।**
**करते हैं जो भव्य शतेन्द्रों, से वन्दित हों दिव्य चरण ॥९॥**

**ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जल फल आदि निर्मल अष्ट-द्रव्य से जो भव्य जीव श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजा करते हैं। उनके सुन्दर चरण सौ इन्द्रों से वन्दनीय होते हैं।

## जयमाला

पद्धरि

**ज्ञानरूप ओंकार नमस्ते, ह्रीं मध्ये प्रभु शान्ति नमस्ते।**
**स्नातकऋषि अरिहन्त नमस्ते, दया धर्म - परिपूर्ण नमस्ते ॥१॥**

**अर्थ**—ज्ञान रूप, परमेष्ठी वाचक ओम् कार को नमन हो। ह्रीं कार के मध्य में विराजमान श्री शान्तिनाथ भगवान् को नमन हो, केवलज्ञान ऋद्धि को प्राप्त करने वाले परमऋषि को नमन हो एवं दयाधर्म से सहित अरिहन्त भगवान् को नमन हो।

**एकानेक - स्वरूप नमस्ते, श्रीमच्चक्राधीश नमस्ते।**
**शान्ति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, ज्ञान गर्भ निज रूप नमस्ते ॥२॥**

**अर्थ**—एक और अनेक स्वरूप वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् को नमन हो, धर्मचक्र के स्वामी श्री शान्तिनाथ भगवान् को नमन हो, मोक्ष स्वरूपी, उज्ज्वल श्री शान्तिनाथ भगवान् को नमन हो, अपने ज्ञानमय स्वरूप से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् को नमन हो।

**नाना भाषा बोध नमस्ते, आशा-पाश विहीन नमस्ते।**
**पावन - गुण - गण गीत नमस्ते, अष्टकर्म - विध्वंस नमस्ते ॥३॥**

**अर्थ**—अनेक भाषात्मक वाणी वाले भगवान् को नमन हो, विषयों की आशा के बन्धन से रहित भगवान् को नमन हो, पवित्र गुणों के समूह से प्रशंसनीय भगवान् को नमन हो एवं आठ कर्मों को नष्ट करने वाले भगवान् को नमन हो।

**तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, पर संकल्प - विहीन नमस्ते।**
**मुक्ति वधू के कन्त नमस्ते, सम्यक्चारित दक्ष नमस्ते ॥४॥**

**अर्थ**—तीर्थंकर पद से पवित्र भगवान् को नमन हो, पर पदार्थों में ममत्व भाव से रहित भगवान् को नमन हो, मोक्ष रूपी स्त्री के पति भगवान् को नमन हो एवं सम्यक्चारित्र में निपुण भगवान् को नमन हो।

**आत्म स्वभावे लीन नमस्ते, रत्नत्रय - संयुक्त नमस्ते ।**
**आत्म बोध परिपूर्ण नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते ॥५॥**

**अर्थ**—आत्म स्वभाव में स्थित भगवान् को नमन हो, रत्नत्रय से सहित भगवान् को नमन हो, आत्मज्ञान से परिपूर्ण भगवान् को नमन हो, इह लोक और पर लोक में सुख देने वाले भगवान् को नमन हो।

**करुणा सागर नाथ नमस्ते, वाणी विश्व हिताय नमस्ते ।**
**शान्तिनाथ परमेश नमस्ते, तीव्र गरल-हर दक्ष नमस्ते ॥६॥**

**अर्थ**—दया समुद्र के स्वामी भगवान् को नमन हो, संसार का हित करने वचनों के स्वामी भगवान् को नमन हो, परम ईश्वर शान्तिनाथ भगवान् को नमन हो, भयानक जहर को नष्ट करने वाले भगवान् को नमन हो।

**कुरुवंशे अवतंस नमस्ते, ऋषि चित हर्षित करण नमस्ते ।**
**कुल क्रमकारि जिनेन्द्र नमस्ते, सदा विचित्र स्वरूप नमस्ते ॥७॥**

**अर्थ**—कुरुवंश के मुकुट स्वरूप भगवान् को नमन हो, ऋषि मुनियों के मन के भावों को प्रसन्न करने वाले भगवान् को नमन हो, धर्म की परम्परा के क्रम को करने वाले भगवान् को नमन हो, हमेशा असाधारण स्वरूप से सहित भगवान् को नमन हो।

**ह्रीं बीजे वरशायि नमस्ते, धीर वीर भुवनेन्द्र नमस्ते ।**
**विघ्नविनाशक शान्ति नमस्ते, प्राणि नाथ तव नाम नमस्ते ॥८॥**

**अर्थ**—ह्रीं बीजाक्षर में श्रेष्ठ स्थान वाले भगवान् को नमन हो, अनन्तबल, धैर्य वान तीनों लोकों के स्वामी भगवान् को नमन हो, विघ्नों को नष्ट करने वाले शान्तिनाथ भगवान् को नमन हो, जिनका नाम समस्त जीवों का कल्याण करने वाला है उन भगवान् को नमन हो।

**भय हर्ता निर्भीक नमस्ते, दिव्य धुनी शिव रूप नमस्ते ।**

**धर्म धुरंधर धीर नमस्ते, निज चैतन्ये लीन नमस्ते ॥९॥**

**अर्थ**—भय रहित और भय को नष्ट करने वाले भगवान् को नमन हो, दिव्यध्वनि और मोक्ष स्वरूपी भगवान् को नमन हो, धर्म में श्रेष्ठ गम्भीर भगवान् को नमन हो, अपने चैतन्य स्वरूप में स्थित भगवान् को नमन हो।

घत्ता

**शान्ति जिनाष्टक को जो भविजन, धारे नित्य हृदय में ।**
**सुख सम्पति ऐश्वर्य प्राप्त हो, संशय नहीं विजय में ॥१०॥**

**अर्थ**—श्री शान्तिनाथ भगवान् के इस अष्टक को जो भव्य जीव हमेशा अपने मन में धारण करता है उसे सुख, सम्पत्ति और यश प्राप्त होता है एवं उसकी विजय में कोई शंका नहीं रहती है।

**ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

❑ ❑ ❑

## प्रथम वलय पूजा

प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्

**प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्त्ता कर्म दलन।**
**हं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन ॥१॥**

**ॐ ह्रीं अशोकतरुसत्प्रातिहार्यमण्डिताय अशोकतरुयुक्तपदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—समस्त जीवों की बाधाओं को समाप्त करने एवं कर्मों के समूह को नष्ट करने के लिए हं बीजाक्षर के आलम्बन से श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजन करता हूँ।

**प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्त्ता कर्म दलन।**
**भं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन ॥२॥**

**ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय सुरपुष्पवृष्टियुक्तपदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—सभी जीवों की बाधाओं को समाप्त करने एवं कर्मों के समूह को नष्ट करने के लिए भं बीजाक्षर के आलम्बन से श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजन करता हूँ।

**प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्त्ता कर्म दलन।**
**मं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन ॥३॥**

**ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय दिव्यध्वनियुक्तपदप्रदाय म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—सभी जीवों की बाधाओं को समाप्त करने एवं कर्मों के समूह को नष्ट करने के लिए मं बीजाक्षर के आलम्बन से श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजन करता हूँ।

**प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्ता कर्म दलन।**
**रं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन ॥४॥**

**ॐ ह्रीं चामरोत्तोलनसत्प्रातिहार्यमण्डिताय चामरोत्तोलनयुक्तपदप्रदाय र्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—समस्त जीवों की बाधाओं को समाप्त करने एवं कर्मों के समूह को नष्ट करने के लिए रं बीजाक्षर के आलम्बन से श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजन करता हूँ।

**प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्त्ता कर्म दलन।**
**घं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन ॥५॥**

**ॐ ह्रीं सिंहासनसत्प्रातिहार्यमण्डिताय सिंहासनयुक्तपदप्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—समस्त जीवों की बाधाओं को समाप्त करने एवं कर्मों के समूह को नष्ट करने के लिए घं बीजाक्षर के आलम्बन से श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजन करता हूँ।

**प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्त्ता कर्म दलन।**
**झं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन ॥६॥**

**ॐ ह्रीं भामण्डलसत्प्रातिहार्यमण्डिताय भामण्डलयुक्तपदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—समस्त जीवों की बाधाओं को समाप्त करने एवं कर्मों के समूह को नष्ट करने के लिए झं बीजाक्षर के आलम्बन से श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजन करता हूँ।

**प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्त्ता कर्म दलन।**
**सं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन ॥७॥**

**ॐ ह्रीं दुन्दुभिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय दुन्दुभियुक्तपदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—समस्त जीवों की बाधाओं को समाप्त करने एवं कर्मों के समूह को नष्ट करने के लिए सं बीजाक्षर के आलम्बन से श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजन करता हूँ।

**प्राणि मात्र की बाधाओं के, हर्ता कर्त्ता कर्म दलन।**
**खं बीजाक्षर का आश्रय ले, करता शान्तिनाथ पूजन ॥८॥**

**ॐ ह्रीं छत्रत्रयसत्प्रातिहार्यमण्डिताय छत्रत्रययुक्तपदप्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—समस्त जीवों की बाधाओं को समाप्त करने एवं कर्मों के समूह को नष्ट करने के लिए खं बीजाक्षर के आलम्बन से श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजन करता हूँ।

**ह भ म र घ झ स ख बीजयुत, वर्णन कर भरपूर।**
**स्तोत्र अर्घ्य से पूजते, विघ्न वर्ग हों दूर ॥९॥**

**ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्यसहिताय अष्टबीजमण्डनमण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं ...।**

**अर्थ**—हं भं मं रं घं झं सं खं आदि बीजाक्षरों से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् के गुणों के कथन से परिपूर्ण इस स्तोत्र रूपी अर्घ्य से विघ्न समूह को नष्ट करने के लिए आपकी पूजन करता हूँ।

## द्वितीय वलय पूजा

**द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्**

**भक्ति भाव युत प्रभु पूजन को, इन्द्र जिनालय जावें।**

**तीर्थंकर पदवी के कारण, श्री जिनके गुण गावें ॥**
**श्री जिन प्रभु के पद पंकज की, पूजा इन्द्र रचावें।**
**दर्शन ज्ञान अनन्त सुखामृत, बल विक्रम वे पावें ॥१॥**

**ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत-विदेहादि-शतैक-सप्तति-क्षेत्रार्यखण्डे भूत-भविष्यत्-वर्तमान सर्वार्हत्परमेष्ठि-पदपंकजे सन्मति-सद्भक्त्युपेता-मलतर-खड्गोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—भक्ति भाव से सहित इन्द्र पूजन के लिए जिन मंदिर जाते हैं। जिनने तीर्थंकर पद प्राप्त किया है उन जिनेन्द्र भगवान् का गुणानुवाद करते हुए अनन्तदर्शन, अनन्तज्ञान, अनन्त सुख और अनन्त बल रूप अमृत को प्राप्त करने वाले अरिहन्त भगवान् के चरण कमलों की इन्द्र पूजन करते हैं।

**अष्ट कर्म से मुक्त निरंजन, सिद्ध स्वरूपी राजे।**
**क्षायिक सम्यक् आदि गुणोत्तम, सीमातीत विराजें ॥**
**भूत भविष्यत् वर्तमान के, सिद्ध अनन्त निरंजन।**
**निजस्वरूप में लीन प्रभू का, करता पूजन वंदन ॥२॥**

**ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत-विदेहादि-शतैक-सप्तति -क्षेत्रार्य-खण्डे भूत-भविष्यत्-वर्तमान सर्व सिद्ध परमेष्ठि पदपंकजे सन्मति-सद्भक्त्यु -पेतामलतर-खड्गोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।**

**अर्थ**—अष्ट कर्म से रहित निर्मल क्षायिक सम्यक्त्व आदि श्रेष्ठ अनन्तगुणों से सहित भूतकाल, भविष्यकाल और वर्तमान काल के मल रहित अपने आत्म स्वरूप में स्थित अनन्त सिद्ध भगवान् की पूजन एवं वन्दना करता हूँ।

**पंचाचार - विभूषित गुरुवर, आतम - ज्योति जगावें।**
**ज्ञानतपोनिधि कर्म दलन को, ध्यान - कुठार उठावें ॥**
**शान्ति सुधाकर की शुचि शीतल,रश्मि-प्रकाश प्रसारें।**
**संघ चतुर्विध के अधिनायक, काम - महारिपु मारें ॥३॥**

**ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत-विदेहादि-शतैक-सप्तति-क्षेत्रार्यखण्डे भूत-भविष्यत्-वर्तमान-सर्वाचार्य-परमेष्ठि-पदपंकजे सन्मति-सद्भक्त्यु-पेतामलतर-खड्गोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।**

**अर्थ**—ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार से सुसज्जित, आत्म ज्योति को जागृत करने वाले शान्तिरूपी चन्द्रमा की पवित्र, शीतल किरणों के प्रकाश को फैलाने वाले मुनि, आर्यिका श्रावक श्राविका रूप चतुर्विध संघ के स्वामी आचार्य परमेष्ठी की पूजन करता हूँ।

**द्वादश अंग विभूषित मुनिवर, पाठक साधु सुधी के।**
**मान विमर्दन करते निर्मद, आत्म सुधारस पी के॥**
**ध्यानाध्ययन निरन्तर जिनके, शिव-साधन दर्शावें।**
**इष्टानिष्ट संयोग वियोगे, हर्ष-विषाद नशावें ॥४॥**

**ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत-विदेहादि-शतैक-सप्तति-क्षेत्रार्यखण्डे भूत-भविष्यत्-वर्तमान-सर्वपाठक-परमेष्ठि-पदपंकजे सन्मति-सद्भक्त्यु-पेतामलतर-खड्गोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।**

**अर्थ**—बारह अंगों के ज्ञान से सहित उपाध्याय परमेष्ठी, आत्मानुभव रूपी अमृत का पान करते हुए मान रहित होकर अहंकार को नष्ट करते हैं। हमेशा ध्यान और अध्ययन में संलग्न रहकर मोक्ष का मार्ग दिखाते हैं। इष्ट, अनिष्ट, संयोग, वियोग में राग-द्वेष को समाप्त करते हैं।

**ज्ञान ध्यान तप लीन निरन्तर, समता - स्वादक योगी।**
**विषयातीत-स्वरूप जितेन्द्रिय,आत्म स्वरस के भोगी॥**
**ध्यान कृपाण लिए मुनि योगी, कर्म - महारिपु मारें।**
**गुणश्रेणी युत करें निर्जरा, निजगुण रूप विचारें ॥५॥**

**ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत-विदेहादि-शतैक-सप्तति-क्षेत्रार्यखण्डे भूत-भविष्यत-वर्तमान-सर्वसाधु-परमेष्ठि-पदपंकजे सन्मति-सद्भक्त्यु-पेतामलतर-खड्गोज्झित-निदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।**

**अर्थ**—ज्ञान, ध्यान, तप में स्थित हमेशा समता का आस्वादन करने वाले, आत्मज्ञानी, विषय-वासनाओं से रहित, इन्द्रियों को जीतने वाले, आत्म रस को ग्रहण करते हुए आत्मज्ञानी मुनिराज ध्यान रूपी तलवार से कर्म रूपी महा शत्रु को मारकर, अपने गुणों का चिन्तन कर गुण श्रेणी निर्जरा करते हैं।

**पच्चीस दोषों से रहित, अष्टांग सम्यग् दर्शनम्।**

**अर्हन्त आगम गुरुवरों का, मैं करों नित अर्चनम् ॥६॥**

**ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे शुद्धसम्यक्त्वामलतर-खड्गोज्झित-निदान-बंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—आठ मद, तीन मूढ़ता, छह अनायतन और शंकादि आठ दोष से रहित और निशंकितादि आठ गुणों से सहित सम्यग्दर्शन, अरिहन्त भगवान्, द्वादशांग जिनवाणी एवं निर्ग्रन्थ गुरुओं की मैं हमेशा पूजन करता हूँ।

**द्वादशांग जिनेन्द्र - वाणी, ज्ञान - दोष - विवर्जितम्।**
**सम्यग्विभूषित आत्मज्योति, प्रकाश को शत वन्दनम् ॥७॥**

**ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे शुद्धसम्यज्ञानामलतर-खड्गोज्झित-निदान-बंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—आत्म ज्योति को प्रकाशित करने वाला सम्यक्त्व से सहित एवं दोषों से रहित द्वादशांग जिनवाणी रूप शुद्ध ज्ञान का शत बार वन्दना करता हूँ।

**गुप्तियाँ त्रय समिति पाँचों, और पंच महाव्रतम्।**
**तेरह प्रकार चरित्र सम्यक्, का करों मैं पूजनम् ॥८॥**

**ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनहेतवे शुद्धसम्यक्चारित्रामलतर-खड्गोज्झित-निदान-बंधनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—तीन गुप्तियाँ, पाँच समितियाँ और पाँच महाव्रत इस प्रकार तेरह प्रकार के सम्यक्चारित्र की मैं पूजन करता हूँ।

**ज्ञानावरणी पंच प्रकृतियाँ, प्रभु ने सर्व विनाशी।**
**शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी ॥९॥**

**ॐ ह्रीं ज्ञानावरण-कर्मबंध-बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—ज्ञानावरणी कर्म की समस्त पाँचों प्रकृतियों को नष्ट कर शाश्वत मोक्ष पद को प्राप्त करने वाले दया के सागर श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजा करता हूँ।

**दर्शनावरणी कर्म प्रकृति नव, प्रभु ने सर्व विनाशी।**
**शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी ॥१०॥**

**ॐ ह्रीं दर्शनावरण - कर्मबंध - बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—दर्शनावरणी कर्म की समस्त नौ प्रकृतियों को नष्ट कर शाश्वत मोक्ष पद को प्राप्त करने वाले दया के सागर श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजा करता हूँ।

**वेदनीय विधि सुखदुख दायक, प्रभु ने उभय विनाशी।**
**शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी ॥११॥**

**ॐ ह्रीं वेदनीय-कर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—सुख और दुःख को देने वाले वेदनीय कर्म की दोनों प्रकृतियों को नष्ट कर शाश्वत मोक्ष पद को प्राप्त करने वाले दया के सागर श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजा करता हूँ।

**अष्टाविंशति प्रकृति मोह की, प्रभु ने सर्व विनाशी।**
**शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी ॥१२॥**

**ॐ ह्रीं प्रचण्डमोहनीय-कर्मबंध-बंधनकृते सति तत्कर्म-विपाकोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।**

**अर्थ**—मोहनीय कर्म की अट्ठाइस प्रकृतियों को नष्ट कर शाश्वत मोक्ष पद को प्राप्त करने वाले दया के सागर श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजा करता हूँ।

**आयु कर्म की प्रकृति चार हैं, प्रभु ने सर्व विनाशी।**
**शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी ॥१३॥**

**ॐ ह्रीं आयु-कर्मबंध-बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—आयु कर्म की चार प्रकृतियाँ हैं, उनको नष्ट कर शाश्वत मोक्ष पद को प्राप्त करने वाले दया के सागर श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजा करता हूँ।

**नाम कर्म की प्रकृति नवति त्रय, प्रभु ने सर्व विनाशी।**

**शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी ॥१४॥**

**ॐ ह्रीं नाम-कर्मबंध-बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—नामकर्म की तेरानवे प्रकृतियों को नष्ट कर शाश्वत मोक्ष पद को प्राप्त करने वाले दया के सागर श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजा करता हूँ।

**गोत्रकर्म की प्रकृति शुभाशुभ, प्रभु ने सर्व विनाशी ।**
**शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी ॥१५॥**

**ॐ ह्रीं गोत्र-कर्मबंध-बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—गोत्र कर्म की शुभ और अशुभ प्रकृतियों को नष्ट कर शाश्वत मोक्ष पद को प्राप्त करने वाले दया के सागर श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजा करता हूँ।

**अन्तराय विधि पंच प्रकृतियाँ, प्रभु ने सर्व विनाशी।**
**शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी ॥१६॥**

**ॐ ह्रीं अंतराय-कर्मबंध-बंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—अन्तराय कर्म की सभी पाँचों प्रकृतियों को नष्ट कर शाश्वत मोक्ष पद को प्राप्त करने वाले दया के सागर श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजा करता हूँ।

**दर्शन ज्ञान चरण से भूषित, पंच परम पद पाऊँ।**
**शान्तिनाथ जिन के चरणों में, नित प्रति अर्घ चढ़ाऊँ ॥१७॥**

**ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठि-पदप्रदायकाय दर्शन-ज्ञान-चारित्र-कारकाय अष्टकर्म-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं ...।**

**अर्थ**—सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र से सहित पंचपरमेष्ठी पद को प्राप्त करने के लिए हमेशा श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरणों में अर्घ्य चढ़ाता हूँ।

❑ ❑ ❑

## तृतीय वलय पूजा

तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्

**निज-परिवार सहित असुरों के, इन्द्र जिनालय आवें ।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥१॥**

**ॐ ह्रीं असुरकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—असुरकुमार इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**निज - परिवार सहित नागों के, इन्द्र जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥२॥**

**ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—नागकुमार इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**निज-परिवार सहित विद्युत के, इन्द्र जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥३॥**

**ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।**

**अर्थ**—विद्युतकुमार इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**निज-परिवार सहित सुपर्ण के, इन्द्र जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥४॥**

**ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।**

**अर्थ**—सुपर्णकुमार इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**निज-परिवार सहित पावक के, इन्द्र जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥५॥**

**ॐ ह्रीं अग्निकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—अग्निकुमार इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**निज-परिवार सहित मारुत के, इन्द्र जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥६॥**

**ॐ ह्रीं वातकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय-जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।**

**अर्थ**—वायुकुमार इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**निज - परिवार सहित मेघों के, इन्द्र जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥७॥**

**ॐ ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—मेघकुमार इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**निज - परिवार सहित सागर के, इन्द्र जिनालय**
**आ व ।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥८॥**

**ॐ ह्रीं उदधिकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—उदधिकुमार इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**निज - परिवार सहित द्वीपों के, इन्द्र जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥९॥**

**ॐ ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—द्वीपकुमार इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ

भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**निज-परिवार सहित दिक्सुर के, इन्द्र जिनालय**
**आ व ।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥१०॥**

**ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—दिक्कुमार इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**निज - परिवार सहित किन्नर के, इन्द्र जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥११॥**

**ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—किन्नर इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**किम्पुरुषों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥१२॥**

**ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—किम्पुरुष इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**महोरगों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥१३॥**

**ॐ ह्रीं महोरगेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—महोरग इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**गंधर्वों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥१४॥**

**ॐ ह्रीं गन्धर्वेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—गन्धर्व इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**यक्षसुरों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥१५॥**

**ॐ ह्रीं यक्षेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—यक्ष इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**राक्षसगण के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥१६॥**

**ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय - जिननाथाय तथैव पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—राक्षस इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**भूतसुरों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥१७॥**

**ॐ ह्रीं भूतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—भूत इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**सुरपिशाच के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥१८॥**

**ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—पिशाच देवों के इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री

शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**ज्योतिषियों के इन्द्र सहित,परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥१९॥**

**ॐ ह्रीं चन्द्रनामकेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।**

**अर्थ**—ज्योतिष देवों के चन्द्र नामक इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**ज्योतिषिदेव प्रतीन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥२०॥**

**ॐ ह्रीं भास्करेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—ज्योतिष देवों के सूर्य नामक प्रतीन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**इंद्रामर सौधर्म स्वर्ग के परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥२१॥**

**ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—सौधर्म स्वर्ग के देव एवं इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**इंद्रामर ईशान स्वर्ग के परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥२२॥**

**ॐ ह्रीं ईशानेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—ईशान स्वर्ग के देव एवं इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**सनत स्वर्ग के इन्द्र सहित परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥२३॥**

**ॐ ह्रीं सानत्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ—**सनतस्वर्ग के इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**इन्द्रामर माहेन्द्र स्वर्ग के, परिवार जिनालय**
**अ ा व ` ं ।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥२४॥**

**ॐ ह्रीं माहेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ—**माहेन्द्र स्वर्ग के देव एवं इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**ब्रह्मस्वर्ग के इन्द्र सहित परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥२५॥**

**ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ—**ब्रह्म स्वर्ग के इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**लान्तव के सुर इन्द्र सहित परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥२६॥**

**ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय-जिननाथाय तथैव पद-प्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ—**लान्तव स्वर्ग के देव एवं इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**शुक्र स्वर्ग के इन्द्र सहित परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥२७॥**

**ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय-जिननाथाय तथैवपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ—**शुक्रस्वर्ग के इन्द्र अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री

शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**शतारेन्द्र शुभभाव सहित परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥२८॥**

**ॐ ह्रीं शतारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—शतारइन्द्र शुभ भाव पूर्वक अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**आनतेन्द्र शुभभाव सहित परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥२९॥**

**ॐ ह्रीं आनतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय-जिननाथाय तथैव पद-प्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—आनत इन्द्र शुभ भाव पूर्वक अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**प्राणतेन्द्र शुभभाव सहित परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥३०॥**

**ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय-जिननाथाय तथैव पद-प्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—प्राणत इन्द्र शुभ भाव पूर्वक अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**आरणेन्द्र शुभभाव सहित परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥३१॥**

**ॐ ह्रीं आरणेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—आरण इन्द्र शुभ भाव पूर्वक अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**अच्युतेन्द्र शुभभाव सहित परिवार जिनालय आवें।**
**शान्तिप्रभु के पद पंकज की, पूजा नित्य रचावें ॥३२॥**

**ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—अच्युत इन्द्र शुभ भाव पूर्वक अपने परिवार के साथ जिन मंदिर आकर श्री शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों की हमेशा पूजन करते हैं।

**बत्तीस इन्द्रों से प्रपूजित, शान्तिनाथ जिनेश को।**
**परिपूर्ण अर्घ चढ़ाय पाऊँ, हे प्रभो! शिवलोक को**
**॥ ३ ३ ॥**

**ॐ ह्रीं चतुर्णिकायदेवेन्द्रपूजिताय श्री शान्तिनाथाय पूर्णार्घ्यं ...।**

**अर्थ**—बत्तीस इन्द्रों से पूजित श्री शान्तिनाथ भगवान् को पूर्ण अर्घ्य चढ़ाता हूँ। हे भगवान् मुझे मोक्ष की प्राप्ति हो।

❑ ❑ ❑

## चतुर्थ वलय पूजा

चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्

वसंततिलका छंद

**मन के विकार सब नाशन हेतु तेरी।**
**पूजा प्रशांत करती लगती न देरी ॥**
**हे शान्तिनाथ भगवन! भवतापहारी।**
**सादर प्रणाम तुमको अघ नाशकारी ॥१॥**

**ॐ ह्रीं मानसिकविकारोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—मन के दोषों को नष्ट करने के लिए आपकी पूजा ही मन को चंचलता रहित कर स्थिरता प्रदान करती है इसमें समय नहीं लगता है। हे शान्तिनाथ भगवान् आप संसार के ताप को समाप्त करने वाले एवं पापों के समूह को नष्ट करने वाले हैं मैं आपको आदर सहित प्रणाम करता हूँ।

**वाणी प्रयत्नकृत दोष निवारने को।**
**पूजा समर्थ भविजन्म सुधारने को ॥**
**हे शान्तिनाथ भगवन! भवतापहारी।**
**सादर प्रणाम तुमको अघ नाशकारी ॥२॥**

**ॐ ह्रीं वाचनिकविकारोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—वचनों के द्वारा किए गये दोषों का निवारण करने के लिए एवं भव्यजीवों के मनुष्य जन्म को सुधारने के लिए आपकी पूजन ही समर्थ है। हे शान्तिनाथ भगवान् आप संसार के ताप को समाप्त करने वाले एवं पापों के समूह को नष्ट करने वाले हैं मैं आपको आदर सहित प्रणाम करता हूँ।

**काया कुठार कृत पाप प्रणाशकारी।**
**अर्चन सशक्त सर्वत्र प्रदोषहारी ॥**
**हे शान्तिनाथ भगवन! भवतापहारी।**
**सादर प्रणाम तुमको अघ नाशकारी ॥३॥**

**ॐ ह्रीं कायिक-पापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—शरीर रूपी कुल्हाड़ी से किए गये पापों को एवं अपराधों को नष्ट करने के लिए आपकी पूजन सभी प्रकार से शक्तिशाली कारण है। हे शान्तिनाथ भगवान् आप संसार के ताप को समाप्त करने वाले एवं पापों के समूह को नष्ट करने वाले हैं, मैं आपको आदर सहित प्रणाम करता हूँ।

**राज्यश्री, पुर, गेह, नाश सों, होय उपद्रव भारी।**
**उनके नाशन हेतु प्रभु की, पूजा मंगलकारी ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥४॥**

**ॐ ह्रीं राज्य-लक्ष्मी-पुर-गेह-पदभ्रष्टोद्-भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।**

**अर्थ**—राज्य लक्ष्मी, नगर, गृह आदि को नष्ट करने वाले अनेक भयानक उपद्रवों के निवारण के लिए आपकी पूजन ही मंगल को करने वाली है। हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित करते हैं वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**पूर्वोपार्जित कर्म उदय सों, घोर विपत्ति सतावे।**
**लक्ष्मी हीन दरिद्री नर नित, तीव्र महा दुख पावे ॥**

**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥५॥**

**ॐ ह्रीं दारिद्रोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—पूर्व जन्मों के बाँधे हुए कर्मों का उदय होने से अनेक विपत्तियाँ दुःख देती हैं। मनुष्य धन-वैभव से रहित, गरीब अत्यन्त कष्टकारी दुःखों को भोगता है। हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित करते हैं वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान प्राप्त को कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**भीम भगन्दर कुष्ठ जलोदर, आदिक रोग घनेरे।**
**व्याधि उपद्रव कर्म विनाशन, हेतु जजों पद तेरे॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥६॥**

**ॐ ह्रीं भीम-भगन्दर- गलितकुष्ठ - गुल्म - जलोदर-रक्त-पित्त-कफ-वात-स्फोटकाद्युपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—असाध्य भगन्दर, कुष्ठ, जलोदर आदि अनेक भयंकर रोग शरीर को दुःखी करते हैं। कर्मों के द्वारा किए जाने वाले इन कष्टों को नष्ट करने के लिए आपके चरणों की पूजा करता हूँ। हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित करते हैं, वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**इष्ट वियोग अनिष्ट योग से, जीव महा दुख पावे।**
**निज परिणति को भूले मोही, आर्त रौद्र उपजावे ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥७॥**

**ॐह्रीं इष्टवियोगानिष्टसंयोगोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—प्रिय जनों का विछोह और अप्रिय जनों के संयोग से जीव महान्

दुःख प्राप्त करते हैं। मोहनीय कर्म के कारण अपनी आत्मा के परिणामों को भूल कर आर्त्त ध्यान और रौद्रध्यान को उत्पन्न करते हैं। हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित करते हैं वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**निज सेना वा पर सेना कृत, घोर उपद्रव आवें।**
**धर्माराधन ध्यान विमुख तब, प्राणि महा दुख पावें ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥८॥**

**ॐ ह्रीं स्वचक्र-परचक्रोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—अपनी सेना या शत्रु की सेना के द्वारा भयंकर आपत्तियाँ आती हैं। ऐसे समय में जीव धर्मध्यान और धर्म की आराधना को विस्मृत कर महान् दुःखों को प्राप्त करता है। हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित करते हैं, वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**नाना आयुध देह विनाशक, घोर उपद्रव आवें।**
**आर्त रौद्र की परिणति व्यापै, कोई नहीं बचावें ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥९॥**

**ॐ ह्रीं विविधायुधोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—अनेक प्रकार के हथियारों से शरीर को नष्ट करने वाले भयंकर उपद्रव आयें, आर्त्त और रौद्ररूप भाव उत्पन्न हो रहे हो कोई बचाने वाला न हो। वे शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित कर तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**जलचर प्राणी दुष्ट नक्र औ, मत्स्य महा भयकारी।**
**कर्म उदय जल बीच सतावें, व्याकुल हों नरनारी ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**

**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥१०॥**

**ॐ ह्रीं दुष्टजलचरजीवोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जल में रहने वाले भयंकर घड़ियाल और महा भयानक मगरमच्छ आदि जलचर जीव अत्यन्त कष्ट देते हैं, कर्म के उदय से स्त्री एवं पुरुष भयभीत होते हैं। वे शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित कर तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**वन पर्वत के मध्य चतुष्पद, सिंह गजादिक प्रानी।**
**आक्रामक वन नित्य सतावें, करें दुष्ट मनमानी ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥११॥**

**ॐ ह्रीं व्याघ्र-सिंह-गजादिक-वन-पर्वत-वासि-श्वापदाद्युपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जंगल और पहाड़ों में चार पैर वाले शेर और हाथी आदि आक्रमण करने वाले बनकर हमेशा जीवों को दुःख देते हुए मनमानी करते हैं। ऐसे जीव शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित कर तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**भूचर खेचर क्रूर जीव कृत, तीव्र उपद्रव आवें।**
**आशापाश बंधा यह प्राणी, परपरणति**
**लिपटा वे ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥१२॥**

**ॐ ह्रीं भूचर-गगनचर-क्रूर-जीवोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—भूमि पर चलने वाले, आकाश में चलने वाले निर्दयी जीवों द्वारा किए जाने वाले भयंकर उपद्रव आने पर आशा के बन्धन में बँधा यह जीव विभाव भावों में लिप्त रहता है। वह शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों

को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित कर तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**भीम भुजंगम वृश्चिक भीषण, घोर विषैले प्राणी।**
**विषम हलाहल दंत दशन से, पीड़ित हों जग प्राणी॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥१३॥**

**ॐ ह्रीं व्याल-वृश्चिकादि-विष-दुर्द्धरोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—भयंकर सर्प, बिच्छू आदि भयानक डरावने बिषैले जीवों के अत्यन्त भयंकर हलाहल जहर से युक्त दाँतों से दुःखी संसार के जीव हे शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों को अपने मनरूपी मंदिर में स्थापित कर तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्षरूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**नख शृंगादिक तीक्ष्ण विषैले, जीवों के दुःखकारी।**
**कर्म असाता प्रेरित प्राणी, भुगते दुख अति भारी॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥१४॥**

**ॐ ह्रीं दुष्टजीव-पद-कर-नखोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—दुःख को देने वाले तेज और बिषैले नाखून एवं सींग जीवों को दुःखी करते हैं। असाता कर्म के उदय के कारण संसारी जीव बहुत भारी दुःखों को भोगते हैं। वे शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित कर तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**वन पशुओं के दाढ़ सींग नख,अति विकराल घनेरे।**
**चंचु तुंड दंतादिक कृत दुख, घोर असाता घेरे॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**

**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥१५॥**

**ॐ ह्रीं चञ्चु-तुण्ड-दाढ-कण्टकोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।**

**अर्थ**—जंगली जानवरों की दाढ़ों, सींगों, नाखूनों और अत्यन्त भयानक चोंच, मुख आदि के द्वारा असाता वेदनीय कर्म के उदय से भयंकर दुःखों से घिरे हुए हैं। वे शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित कर तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**दावानल वन मध्य भयंकर, खग मृग वृक्ष जलावें।**
**जीव असाता कर्मोदय से, घोर महा दुख पावें ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥१६॥**

**ॐ ह्रीं दावानलोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जंगलों में लगी भयंकर आग पक्षी, हिरण और वृक्ष आदि को जलाती है। संसारी जीव असाता कर्म के उदय से अत्यन्त भयानक दुःख प्राप्त करते हैं। वे शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित कर तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**घोर प्रचंड पवन का दुर्जय, वेग भयंकर धावे।**
**सागर मध्य प्रचंड लहर की, भीम भँवर लहरावे ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥१७॥**

**ॐ ह्रीं प्रचण्ड-पवनोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जो रोकी न जा सके ऐसी भयंकर तेज हवा चलने से समुद्र के बीच भयानक लहरें और भयंकर भँवरें उठती हैं। ऐसे समय शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित कर तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**नौका पोत स्फोट उदधि में, दारुण दुःख प्रदाता।**
**सागर मध्य पतन जब होवे, कर्म विपाक असाता ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥१८॥**

**ॐ ह्रीं नौका-स्फोट-पतनोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—नाव, जहाज आदि के समुद्र में फटने पर असहनीय भयानक दुःख होता है। कर्म के उदय से कोई जीव समुद्र में गिर जाता है। वह शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित कर तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**वन पर्वत भूमंडल मध्ये, उदित उपद्रव भारी।**
**प्रभु पूजा से दूर सभी हों, फल हो मंगलकारी ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥१९॥**

**ॐ ह्रीं वन-नग-मेदिनी-भयंकरोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जंगल, पहाड़ और भूमि पर होने वाले भयानक सभी उपद्रव भगवान् की पूजन से समाप्त हो जाते हैं और मंगलकारी परिणाम होते हैं। हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित करते हैं वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**सरिता सागर कूप सरोवर, झील जलाशय वापी।**
**इनके उपसर्गों से रक्षण, पाता पीड़ित प्राणी ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥२०॥**

**ॐ ह्रीं नदी-सरोवराब्धि-कूप-ह्रदोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—नदी, समुद्र, कुआँ, तालाब, झील, बावड़ी आदि जलाशयों द्वारा होने वाले उपसर्गों से दुःखी जीव आपकी पूजन से रक्षा को प्राप्त करते हैं।

हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित करते हैं वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**विद्युत्पात भयंकर वर्षा, ओला पाला पानी।**
**दैव विपाक अनेक उपद्रव, पीड़ा की मनमानी ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥२१॥**

**ॐ ह्रीं विद्युत्पातादि-भीमाम्बु-वृष्ट्युपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—बिजली गिरने, भयंकर वर्षा, ओला, तुषार और पानी के प्रवाह आदि कर्म के उदय से होने वाले अनेक उपद्रवों से बहुत प्रकार के दुःख होते हैं। हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित करते हैं वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**युद्धस्थल के मध्य शत्रु दल, शस्त्र अनेक चलावें।**
**कर्म असात अकाल मरण दुख, सब ही प्राणी पावें ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥२२॥**

**ॐ ह्रीं संग्राम-स्थलारि-निकटोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—युद्ध के मैदान में शत्रुओं का समूह अनेक हथियार चलाते हैं। असाता कर्म के उदय से सभी जीव अकाल मरण के दुःख को प्राप्त करते हैं। हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित करते हैं वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**डाकिनि शाकिनि भूत प्रेत अरु, चोर पिशाच घनेरे।**
**कर्मों के परिपाक विषम सों, रहते निशदिन घेरे ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**

**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥२३॥**

**ॐ ह्रीं डाकिनी-शाकिनी-भूत-पिशाचादिभय-निवारकायश्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं..।**

**अर्थ**—डाइन, चुड़ैल, भूत, प्रेत, पिशाच और बहुत चोरों का भय कर्मों के उदय से प्रतिकूल होकर दिन-रात घेरे रहते हैं। हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित करते हैं वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**उच्चाटन सम्मोहन थम्भन, घोर उपद्रव आवें।**
**विद्या दुष्ट विविध रूपों में, आकर नित्य सतावें ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥२४॥**

**ॐ ह्रीं मोहन-स्तम्भनोच्चाटन-प्रमुख-दुष्टविद्योपद्रवनिवारकाय श्री शान्ति-नाथाय अर्घ्यं...।**

**अर्थ**—उच्चाटन, सम्मोहन, स्तम्भन आदि दुष्ट विद्याएँ अनेक प्रकार से हमेशा कष्ट देती हैं। हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित करते हैं वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**दुष्ट नवग्रह कृत पीड़ाएँ, कर्म उदय से आवें।**
**अज्ञानी मिथ्यात्वी मूरख, कुगुरु कुदेव मनावें ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥२५॥**

**ॐ ह्रीं दुष्टग्रहाद्युपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—दुष्ट नवग्रहों के द्वारा जो भी दुःख प्राप्त होते हैं वह कर्मों के उदय से होते हैं। अज्ञानी, मिथ्यादृष्टि मूढ़ जीव उनसे छूटने के लिए कुगुरु और कुदेवों की मनौती मनाते हैं। हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित करते हैं, वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**लोह शृंखला के दृढ़ बंधन, अंग उपांग दुखावें।**
**पीड़ित जीव महा दुख पाकर, हाहाकार मचावें ॥**

**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥२६॥**

**ॐ ह्रीं शृंखलाद्युपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—लोहे की जंजीरों के मजबूत बन्धनों से जिनके अंग और उपांग दुःख रहे हो। दुःखी व्यक्ति महान् कष्टों को प्राप्त कर चिल्ला रहा हो। वह शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित कर तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**अल्प आयु कृत कर्म योग से, जन्म मरण दुख भारी।**
**मन में व्याप्त प्रचंड विकलता, दुखिया सब संसारी ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥२७॥**

**ॐ ह्रीं अल्पमृत्युपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—कर्म के संयोग से अल्प आयु के द्वारा जीव जन्म और मरण के बहुत दुःखों को प्राप्त करता है। मन में भयानक बैचेनी से सहित भी संसारी जीव दुःखी हैं। वे शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित कर तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**कर्म उदय दुर्भिक्ष उपद्रव, अन्नाभाव सतावे।**
**जठरानल की भीषण ज्वाला, प्राणी को बिलखावे ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥२८॥**

**ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—कर्म के उदय से दुर्भिक्ष का उपद्रव होता है, अन्न का अभाव हो जाता है, जीवों के पेट में भूख की अग्नि की भयंकर ज्वाला उत्पन्न हो जाती है जिससे संसारी जीव दुःखी, व्याकुल होते हैं। वे शान्तिनाथ भगवान् के चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित कर तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**अंतराय यह लाभ विरोधी, कर्म उदय जब आवें।**
**व्यापारादिक वृद्धि न होवे, धन सम्पत्ति नशावे ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥२९॥**

**ॐ ह्रीं व्यापारवृद्धि-रहित्योपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—अन्तराय कर्म लाभ का विरोधी होता है, इसका उदय आने पर व्यापारादि में वृद्धि नहीं होती है एवं धन सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण-कमलों को अपने मनरूपी मंदिर में स्थापित करते हैं वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**संबंधी परिवार भ्रात सुत, बने अकारण बैरी।**
**घोर उपद्रव करें निरंतर, व्यापे विपद घनेरी ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥३०॥**

**ॐ ह्रीं बंधुत्वोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—भाई, पुत्र आदि परिवार एवं रिश्तेदार बिना कारण के शत्रु बन करके हमेशा भयानक उपद्रव करते हैं जिससे अनेक विपत्तियाँ आतीं हैं। हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित करते हैं वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**अकुटुम्बी संतान बिना नित, अति संक्लेशित होवे।**
**मिथ्या मोह उदय से प्रेरित, प्राणी रोवे धोवे ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥३१॥**

**ॐ ह्रीं अकुटुम्बत्वोपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—कुटुम्ब, परिवार एवं पुत्रादि संतान के बिना अत्यन्त खोटे परिणाम होते हैं। मिथ्यात्व और मोह के उदय में दुःखी होकर रोते धोते रहते हैं। हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में

स्थापित करते हैं वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**पाप उदय अपकीर्ति दुखद हो, आकुलता उपजावे।**
**मनसंताप महा दुख ज्वाला, सब सुखशान्ति जलावे ॥**
**शान्तिनाथ के पद पंकज जो, मन मन्दिर में धारें।**
**मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें ॥३२॥**

**ॐ ह्रीं अपकीर्त्युपद्रव-निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—पाप कर्म के उदय से दुःख को देने वाला अपयश, व्याकुलता उत्पन्न होती है। मन के ताप से दुःख की ज्वाला सभी सुख शान्ति को जला देती है। हे शान्तिनाथ भगवान् जो आपके चरण कमलों को अपने मन रूपी मंदिर में स्थापित करते हैं वे तीनों लोकों को देखने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष रूपी कन्या के स्वामी होते हैं।

**विश्व हिताय उदार भावना, निर्मल मंगलकारी।**
**सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित यह, हो सदैव हितकारी ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना**
**॥ ३ ३ ॥**

**ॐ ह्रीं सम्पूर्णकल्याण-मंगलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—विश्व के हित की निर्मल, उदार और मंगलकारी भावना एवं सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र जीवों के लिए हमेशा कल्याण कारी होते हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**चिंतामणि के तुल्य लाभप्रद, शान्ति प्रभु को ध्यावें।**
**करें अर्चना नित्य चाव से, अतिशय शुभ फल पावें ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**

**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥३४॥**

**ॐ ह्रीं चिन्तामणिसमान-चिन्तित-फलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जो चिन्तामणी रत्न के समान चिन्तित फल को प्रदान करने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् का ध्यान करते हैं और प्रतिदिन रुचि पूर्वक भगवान् की पूजा करते हैं वे अतिशयकारी शुभ फल प्राप्त करते हैं। ऐसे तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**कल्पवृक्ष के समफल दाता, पाप-ताप विनशाये।**
**शान्ति जिनेश्वर का आराधन, शुभ मंगल महकाए ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥३५॥**

**ॐ ह्रीं कल्पवृक्षोपमकल्पितार्थ-फलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजन, आराधना कल्पवृक्ष के समान फल को देने वाली, पाप के दुःखों को नष्ट करने वाली एवं शुभ मंगलमय वातावरण को भक्ति से सुगंधित करती है। ऐसे तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**कामधेनु के तुल्य अनुपम, सर्व मनोरथ दाता।**
**यही अर्चना मंगलकारी, सुख आनंद प्रदाता ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥३६॥**

**ॐ ह्रीं कामधेनूपमकामनापूर्ण-फलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—हे भगवान्! आपकी पूजन मंगल को करने वाली, सुख और आनन्द को देने वाली एवं कामधेनु गाय के समान अनुपम सभी प्रकार की इच्छाओं को पूर्ण करने वाली है। ऐसे तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**परम समुज्ज्वल ध्यान धरे तो, मेटे पथ की बाधा।**
**यही अर्चना मंगलकारी, हर लेती दुख बाधा ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना**
**॥ ३ ७ ॥**

**ॐ ह्रीं परमोज्ज्वल-धर्मध्यान-बाधारहिताय अनवद्यबोधप्रदाय श्रीशान्तिनाथाय अर्घ्यं...।**

**अर्थ**—हे भगवान् आपकी पूजन मंगल को करने वाली और विघ्न एवं दुःखों को नष्ट करती है। परम शुद्ध शुक्लध्यान धारण करने वाले के मोक्षमार्ग के विघ्नों को नष्ट करती है। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**त्रैलोक्य के सब प्राणियों को, नेत्र का उत्सव करें।**
**मनसिज सदृश सौन्दर्य पावें, जो प्रभु पूजा करें ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥३८॥**

**ॐ ह्रीं कामदेवस्वरूपप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—हे भगवान् जो आपकी पूजन करते हैं, वे तीनों लोकों के जीवों की आँखों को आनन्द का महोत्सव करने वाली, कामदेव के समान सुन्दरता को प्राप्त करते हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**कर्पूर चंदन अगरु पंकज, तुल्य सुरभित देह हो।**
**यदि शान्तिजिन की अर्चना में, अमल निश्चल नेह हो ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥३९॥**

**ॐ ह्रीं सुगन्धितशरीरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जो श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजन में प्रीति पूर्वक विशुद्ध स्थिर मन

को लगाता है वह कपूर, अगुरु चन्दन और कमल के समान सुगंधित शरीर प्राप्त करता है। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, नाथ का भामण्डलम्।**
**रवि रश्मिवत् करता प्रकाशित शान्तिजिन**
**गुणामंडलम् ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥४०॥**

**ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथाह्लाद-कारक-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—भव्यजीव रूपी कमलों को विकसित करने के लिए हे शान्तिनाथ भगवान् आपका आभामण्डल और गुणों का समूह सूर्य की किरणों के समान प्रकाशित होता है। ऐसे तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**क्षीर सागर की समुज्ज्वल, अमल लहरों से धवल।**
**देवता गाते निरंतर आपके सद्गुण विमल॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥४१॥**

**ॐ ह्रीं परमोज्ज्वल-गुणगण-सहित-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—क्षीरसमुद्र की दीप्तिवान श्वेत लहरों के समान आपके निर्दोष, मल रहित सम्यक् गुणों की निरन्तर पूजन करते हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**वाचस्पति के तुल्य निर्मल, विशद-प्रतिभादायिनि।**
**आपकी है अर्चना ज्यों, पूर्णिमा की चाँदनी॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥४२॥**

**ॐ ह्रीं वाचस्पतिसमान-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—गणधर स्वामी के समान मल रहित, विशाल असाधारण ज्ञान को देने वाली आपकी पूजा पूर्णिमा की चांदनी की तरह है। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**नवनिधि चतुर्दश रत्न का, स्वामित्व जो चक्रेश को।**
**नर देव इंद्र नरेन्द्र वंदित, पूजता तीर्थेश को॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥४३॥**

**ॐ ह्रीं चक्रवर्ति-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—मनुष्य, देव, इन्द्र और चक्रवर्ती, तीर्थंकर भगवान् की पूजन करते हैं उन्हें नवनिधियाँ, चौदह रत्नों का अधिकार चक्रवर्ती प्राप्त करते हैं। ऐसे तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**दोनों कुलों की कीर्ति को,निज गुण विभूषित जो करें।**
**मुक्ति रमा वरती उन्हें जो, शान्तिजिन पूजा करें॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥४४॥**

**ॐ ह्रीं उभयकुल-कमल-विकासन-सुर्यांशु-समाचरण-प्रतिष्ठित-गुणमण्डित-अत्यन्त-सुन्दराकृति-पुत्रवन्तिगेह-मण्डन-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।**

**अर्थ**—जो अपने सम्यक् गुणों से संसार और मोक्ष दोनों जगह यश को बढ़ाती है। ऐसे शान्तिनाथ भगवान् की पूजन करने वाले को मोक्ष रूपी लक्ष्मी वरण करती है तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**अर्चना शुभभाव से, अरिहंत की जो नित करें।**
**श्रावकोत्तम व्रतधरन, सद् बुद्धि को वे नर वरें॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥४५॥**

**ॐ ह्रीं श्रावक-सद्वृत्तकरण-बुद्धिप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जो शुभ भावों से अरिहन्त भगवान् की हमेशा पूजा करते हैं, वे मनुष्य उत्कृष्ट श्रावक के व्रतों को ग्रहण कर सम्यग्ज्ञान को प्राप्त करते हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**शारदी नव ज्योत्सना सम, कीर्ति का विस्तार हो।**
**प्रभु अर्चना ही मात्र इक जो प्राण का आधार हो ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥४६॥**

**ॐ ह्रीं परमोज्ज्वल-कीर्तिप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—भगवान् की पूजा ही जिनके प्राणों का एक मात्र आधार है उनका यश शरदऋतु के चन्द्रमा की चांदनी के समान वृद्धि को प्राप्त होता है। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**कल्याणकर्त्री राज-लक्ष्मी, धनद सम वे नर वरें।**
**जिनराज की शुभ भावना से, जो सतत पूजा करें ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥४७॥**

**ॐ ह्रीं कल्याणकर-राजधनद-सम-लक्ष्मीप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जो शुभ भाव से जिनेन्द्र भगवान् की हमेशा पूजन करते हैं वे मनुष्य कुबेर के समान कल्याण करने वाली राज्य लक्ष्मी को प्राप्त करते हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**तिर्यंच नारक भव कभी, जिन भक्त को मिलता नहीं।**
**नर देव भव शुभ लोक में, प्रभु भक्त पाते हर कहीं ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥४८॥**

**ॐ ह्रीं नरक-तिर्यंच-गतिरहित-नर-सुर-गतिसहित-भवप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं...।**

**अर्थ**—जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति करने वालों को कभी भी नरक और तिर्यंच गति प्राप्त नहीं होती है। संसार की शुभ गति, देवगति और मनुष्यगति हमेशा भगवान् के भक्त ही प्राप्त करते हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**भावना षोडश विमल प्रभु, अर्चना से प्राप्त हों।**
**तीर्थंकर पदवी मिले, जिससे कि निश्चय आप्त हों ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥४९॥**

**ॐ ह्रीं षोडशकारण-भावना-साधन-बलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जिससे तीर्थंकर पद प्राप्त होता है और निश्चित ही अरिहन्त अवस्था प्रकट होती है, ऐसी सोलह कारण भावना भगवान् की विशुद्ध पूजा भक्ति से प्राप्त होती हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**लोक दुर्लभ स्वप्न सोलह, नाथ माता देखती।**
**एक जननी पद प्रसव, पूजा सहित अवलोकती ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥५०॥**

**ॐ ह्रीं जिनजननी-तुल्यैकजननी-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जो जिनेन्द्र भगवान् की पूजन करते हैं वे संसार में मुश्किल से प्राप्त होने वाले सोलह स्वप्न देखने वाली तीर्थंकर की माता का पद प्राप्त करते हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**तीर्थेश वन सुर शैल पर, होता विशद अभिषेक है।**
**जिनअर्चना का हृदय जिनके, प्रकट विमल विवेक है ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥५१॥**

**ॐ ह्रीं मेरुशिखरे स्नानयुक्त-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जिनके मन में जिनेन्द्र भगवान् की पूजन करने के विशुद्ध परिणाम होते हैं, वे तीर्थंकर बनते हैं और उनका सुमेरु पर्वत पर विशाल अभिषेक होता है। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**संसार भोग शरीर से निर्वेद दीक्षा दायकम्।**
**नर जन्म प्रभु की अर्चना से मिले शुभ शिवकारकम् ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥५२॥**

**ॐ ह्रीं सिद्धसाक्षि-दीक्षाकारि-भवप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जिनेन्द्र भगवान् की पूजन करने वाले संसार, शरीर और भोगों से वैराग्य और दीक्षा देने वाले मोक्ष को प्राप्त करने वाला मनुष्य जन्म प्राप्त करते हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**जिनचंद्र के सालोक शासन, के असीम प्रभाव से।**
**संहनन वज्रवृषभ तथा, नाराच पूजन भाव से ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥५३॥**

**ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच-संहनन-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जिनेन्द्र भगवान् रूपी चन्द्रमा के जिनशासन रूपी असीमित प्रकाश से तीनों लोक प्रभावित होते हैं ऐसे भगवान् की पूजन करने के भाव से वज्रवृषभनाराच और नाराच संहनन प्राप्त होता है। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**रत्नत्रयामृत से विभूषित ध्यान के उपयोग से।**
**निर्मल यथा विख्यात हो जिन अर्चना के योग से ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥५४॥**

**ॐ ह्रीं यथाख्यात-रत्नत्रयाचरण-युक्त-बलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जिनेन्द्र भगवान् की पूजन के संयोग से सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूपी अमृत सहित ध्यान में उपयोग की स्थिरता रूप निर्मल यथाख्यात चारित्र की प्राप्ति होती है। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**निजध्यान में तल्लीन आतम, स्वाद अमृत चख सके ।**
**तीर्थेश शान्ति जिनेश पूजन, से निजातम लख सके ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥५५॥**

**ॐ ह्रीं स्वात्म-ध्यानामृत-स्वादसहित-भवप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजन से जीव अपनी आत्मा के ध्यान में स्थित होकर आत्मानुभवन के अमृत का पान करता है और अपनी आत्मा के स्वरूप को देखता है। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**राजतीं बारह सभा जिन, समवसरणें सर्वदा।**
**त्रैलोक्य पति की अर्चना से, प्राप्त होती सुख प्रदा ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥५६॥**

**ॐ ह्रीं समवसरण-विभूति-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जिनेन्द्र भगवान् के समवसरण में हमेशा बारह सभायें शोभायमान होती हैं। तीनों लोकों के स्वामी श्री शान्तिनाथ भगवान् की पूजन से सुख को देने वाली ये सभायें प्राप्त होती हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**जिनराज प्रभु की दिव्य ध्वनि, दिनरात में चौबार हो।**
**जिसका श्रवण कर भविक को, कैवल्य अपरंपार हो ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥५७॥**

**ॐ ह्रीं सत्केवलज्ञान-विभूति-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ—** जिनेन्द्र भगवान् की दिव्यध्वनि दिन-रात में चार बार खिरती है। जिसको सुनकर भव्य जीव अपार केवलज्ञान को प्राप्त करते हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**अष्ट कर्मों से रहित, गुण अष्ट युत परमात्मा।**
**निर्भय निरंजन सिद्ध पद, पाता सुधी धर्मात्मा॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥५८॥**

**ॐ ह्रीं निरंजन-पदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ—**भगवान् की पूजा करने वाला सम्यग्ज्ञानी धर्मात्मा जीव दर्शनावरणी आदि आठ कर्मों से रहित एवं सम्यक्त्व आदि आठ गुणों से सहित परमात्मा और भय एवं अज्ञान रूपी मल से रहित सिद्ध पद प्राप्त करता है। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**चित्त को आनंद देती, नाथ की दिव्यार्चना।**
**प्रभु के पुजारी की करें, सुर लोक में सुर वंदना॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना॥५९॥**

**ॐ ह्रीं चिदानंद-करणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ—**श्री शान्तिनाथ भगवान् की अलौकिक पूजन मन को असीम आनन्द देती है। आपकी पूजा करने वाले पुजारी की स्वर्ग में भी देव वन्दना करते हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**जिनके विमल मुखचंद्र से, अमृतवचन अनुपम झरें।**
**त्रैलोक्य की निधियाँ सकल, प्रभु के पुजारी को वरें॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**

**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥६०॥**

**ॐ ह्रीं वचनानंद-करणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—श्री शान्तिनाथ भगवान् के मुख रूपी चन्द्रमा से वचन रूपी अनुपम अमृत झरता है। ऐसे भगवान् की पूजा करने वाले पुजारी को तीनों लोकों का समस्त वैभव प्राप्त होता है। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**जिननाथ के तन की अलौकिक, दिव्यअणु अणु की प्रभा ।**
**देखकर होती प्रफुल्लित, हर्ष से बारह सभा ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥६१॥**

**ॐ ह्रीं कायानंद-करण-समर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जिनेन्द्र भगवान् के शरीर के प्रत्येक अंग के अलौकिक सौन्दर्य की दीप्ति को देखकर समवसरण की बारह सभाओं में स्थित समस्त जीव हर्षित होते हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**सर्वार्थ वर्गों का प्रसाधक, नाथ मनसा चिंतनम्।**
**तीर्थेश की दिव्यार्चना का, है महत् अतिशय फलम् ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥६२॥**

**ॐ ह्रीं अर्थवर्ग-सिद्धि-साधन-करणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पुरुषार्थ का सम्पादन करने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् का मन में चिन्तवन करने, अलौकिक पूजन भक्ति करने से महान् अतिशय फल की प्राप्ति होती है। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**प्रभु के गुणों का संस्तवन, निज वाणि वीणा से करें ।**
**वे काम वर्ग प्रसाधिनी, उत्कृष्ट महिमा को वरें ॥**

**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥६३॥**

**ॐ ह्रीं कामवर्ग-सिद्धि-साधन-करणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जो भगवान् के गुणों की सम्यक् स्तुति अपनी वचन रूपी वीणा से करते हैं, वह स्वर्ग के वैभव के संचालन की उत्कृष्ट महिमा को प्राप्त करते हैं। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**जिननाथ पूजा से सफल, निज देह को जो नर करें ।**
**आश्चर्य क्या यदि मोक्ष लक्ष्मी, को सहज ही वे वरें ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥६४॥**

**ॐ ह्रीं मोक्षपुरुषार्थसिद्धि-साधन-करणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—जो जिनेन्द्र भगवान् की पूजन कर अपने मनुष्य जन्म को सफल करते हैं वे यदि सरलता पूर्वक मोक्ष रूपी लक्ष्मी को प्राप्त कर ले तो उसमें कोई आश्चर्य नहीं है। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**निर्लिप्त श्री जिनराज, चौंसठ, ऋद्धियों के नाथ हैं।**
**शत इन्द्र के झुकते सतत, पद पंकजों में माथ हैं ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥६५॥**

**ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि-ऋद्धिसमानांगाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—श्री जिनेन्द्र भगवान् पर पदार्थों के संयोग से रहित एवं चौसठ ऋद्धियों के स्वामी हैं। सौ इन्द्र आपके चरण कमलों में हमेशा अपना मस्तक झुकाते हैं। ऐसे तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**शत एक विंशति तीर्थकर, जिनचंद्र की पूजा करों।**

---

१.ॐ ह्रीं जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव-शान्तिं कुरु कुरु ह्रीं नमः स्वाहा।

**विघ्नौघ के शान्त्यर्थ मैं, पूर्णार्घ्य चरणों में धरों ॥**
**तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।**
**श्री शान्तिनाथ जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना ॥६६॥**

**ॐ ह्रीं शतैकविंशति-कोष्ठ-स्थापिताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यं ...।**

**अर्थ**—एक सौ बीस अर्घ्यों से श्री जिनेन्द्र भगवान् की पूजन करके विघ्नों की शान्ति के लिए पूर्ण अर्घ्य आपके चरणों में समर्पित करता हूँ। तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव के पद से सहित श्री शान्तिनाथ भगवान् की मैं हमेशा आराधना, पूजन करता हूँ।

**अरिहंत के अतिरिक्त कोई, है नहीं जग में शरण।**
**संसार सागर में प्रभु के, चरण हैं तारण तारण ॥**

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

**अर्थ**—अरिहन्त भगवान् के बिना इस संसार में और कोई भी शरण नहीं है। संसार रूपी समुद्र से पार उतारने में आपके श्री चरण ही समर्थ कारण हैं।

**[१]ॐ ह्रीं जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः**
**सर्वोपद्रव-शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।**

## जयमाला

**शान्तिनाथ भगवान् के, गुण हैं अपरंपार।**
**निराधार संसार में, भक्तों के आधार ॥१॥**
**पंचम श्री चक्रीश हैं, द्वादशवें रतिनाथ।**
**षोडशवें तीर्थेश को, सदा नवाऊँ माथ ॥२॥**

**अर्थ**—असीम गुणों के भण्डार श्री शान्तिनाथ भगवान् आधार रहित संसार में आप ही भक्तों के आधार हैं। पाँचवें चक्रवर्ती, बारहवें कामदेव एवं सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ भगवान् को हमेशा मस्तक नवाता हूँ।

पद्धरि

**जय शान्ति प्रभो चिद्रूपराज, जगजलनिधि में अद्भुत जहाज।**
**जय कर्म विनाशक शान्तिनाथ, जय विघ्न विनाशक शान्तिनाथ ॥३॥**

**अर्थ**—चैतन्य स्वरूप के स्वामी, संसार समुद्र के अलौकिक जहाज स्वरूप

श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो। कर्मों को नष्ट करने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो। विघ्न बाधाओं का नाश करने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो।

**जय गुणवारिधि हे शान्तिनाथ, जय मुक्तिवधू के प्राणनाथ।**
**जय आत्म हितंकर शान्तिनाथ, जय काम विनाशक शान्तिनाथ ॥४॥**

**अर्थ**—मुक्ति रूपी कन्या के पति, गुणों के समुद्र श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो। आत्मा का हित करने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो। काम विकार को नष्ट करने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो।

**जय मोहप्रहारक शान्तिनाथ, जय मंगलकारक शान्तिनाथ।**
**जय पाप-विनाशक शान्तिनाथ, भुवनत्रय - ज्ञायक शान्तिनाथ॥५॥**

**अर्थ**—मोहनीय कर्म को नष्ट करने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो। मंगल को करने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो। पाप को नष्ट करने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो। तीनों लोकों को जानने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो।

**जय सम्यक् दायक शान्तिनाथ, शिवमार्ग-विधायक शान्तिनाथ ।**
**जय भवगृहभंजन शान्तिनाथ, जय अलख निरंजन शान्तिनाथ॥६॥**

**अर्थ**—सम्यग्दर्शन को देने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो। मोक्ष के मार्ग का विधान करने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो। भव रूपी घर को नष्ट करने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो। निराकार, निर्विकार श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो।

**जय ऐरासुत श्री शान्तिनाथ, त्रिभुवनत्राता हितु शान्तिनाथ ।**
**जय शान्तिनाथ शिव के दायक, जय हित-संदेशक अघहारक॥७॥**

**अर्थ**—श्री ऐरा माता के पुत्र श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो। तीनों लोकों की रक्षा करने वाले हितकारी श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो। मोक्ष को देने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् की जय हो। हितकारी उपदेश देने वाले और पाप को नष्ट करने वाले भगवान् आपकी जय हो।

**जय जन्म-जरा-मृतु-संहारक, जय रोग-शोक हर सुखदायक ।**
**शिव सुख के साधन शान्तिनाथ, भव भय के भंजक शान्तिनाथ ॥८॥**

**अर्थ**—जन्म, बुढ़ापा और मृत्यु को नष्ट करने वाले भगवान् आपकी जय हो। रोग, शोक को नष्ट कर सुख को देने वाले भगवान् आपकी जय हो। मोक्ष सुख प्राप्त करने के लिए श्री शान्तिनाथ भगवान् प्रमुख कारण एवं संसार के भय को समाप्त करने वाले हैं।

**जय मानबली के मद मर्दक, जय शान्तिनाथ गुण - गणवर्धक ।**
**कर्मों के दुख संहारक हो, भय - भूत - पिशाच - निवारक हो ॥९॥**

**अर्थ**—शक्तिशाली मान के अहंकार को नष्ट करने वाले भगवान् आपकी जय हो। गुणों के समूह की वृद्धि करने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् आपकी जय हो। आप कर्मों के दुःख का नाश करने वाले एवं भूत और पिशाच आदि के भय का निवारण करने वाले हैं।

**नवग्रहकृत बाधा दूर करो, व्यालादि विपति चकचूर करो ।**
**जय भव्य सरोज दिवाकर हो,जय शिव सुख पद्म प्रभाकर हो ॥१०॥**

**अर्थ**—हे भगवान् आप मेरी नवग्रहों की बाधाओं को दूर कीजिए। सर्प, शेर, हाथी आदि की विपत्ति को नष्ट कीजिए। आप भव्य रूपी कमल के लिए सूर्य हैं, आपकी जय हो। मोक्ष सुख रूपी कमल को सूर्य हैं, आपकी जय हो।

**ॐ ह्रीं जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय जयमाला-पूर्णार्घ्यं ...।**

**पाप पंक में मग्न, विश्व के हैं सब प्राणी।**
**मल प्रक्षालन हेतु, नाथ की मंगल वाणी ॥**

**अर्थ**—संसार के समस्त जीव पाप के कीचड़ से सहित हैं। उस मल को धोने के लिए हे भगवान् आपके वचन ही समर्थ हैं।

**प्रभु पद पंकज में जलधारा, अर्पित करते जो प्राणी।**
**होती निश्चय नित्य विश्व में, शान्तिसुधा वह कल्याणी ॥**

**अर्थ**—जो भगवान् के चरण कमलों में जल की धारा समर्पित करते हैं। उन्हें निश्चित ही सम्पूर्ण विश्व को कल्याणकारी शान्ति रूपी अमृत प्राप्त होता है।

**॥ ॐ शांतये शान्तिधारा ॥**

❑ ❑ ❑